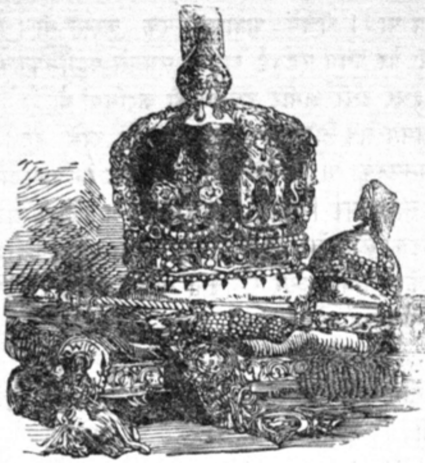
महारानीका मुकुट ।



२८ जून सन् १८३८ के सूर्योदयके पूर्वसेही आकाश मेघाच्छन्न होगया बादल इधर उधर दौडकर लंडनकी शोभा इन्द्रलोकवालोंको सुनाने लगे। वर्षाकी बूँदोंने आनन्दमें आनन्द बढ़ाया। कोहरेसे अंधेरा छागया। लोग उमंगके मारे अंधकारमें अपने हर्षका प्रकाश कर काम काजके लिये इधर उधर दौड़ने लगे। गिरजाओंमें ईश्वर प्रार्थना आरंभ हुई। नगरके नर नारी सुन्दर वस्त्रालंकारों से सज धज कर तैयार हुए। लोगोंके बहुत देरतक टकटकी लगाकर राह देखनेके पश्चात् श्रीमतीकी सवारी बकिंगहाम राजभवनसे निकली। यूरोपियन राज्योंके प्रतिनिधि नेपोलियनका शत्रु डयूक आफ् वेलिंगटन और ब्रिटिश राज्यके उमराव श्रीमतीकी गाड़ीके पीछे २ चलेते थे। गगनभेदी जयघोषसे लंडन नगरी भरगई। इस सवारीमें राजकुटुंबके लोग, राजमाता, श्रीमतीके शरीररक्षक और बड़े २ राजकर्मचारी साथ थे। रानीके शिरपर राजचिह्नसहित सुनहरी दंडका छत्र था चारों ओरसे जयध्वनि गूँजरहीथी। बंदीजन साथ २ स्तुतिपाठ करते जाते थे। बडे ठाठके साथ धीरे २ चलती चलाती सवारी दोनों ओर भीड़को फाडती हुई वेस्टामिन्स्टर एबी नामक गिरिजेमें पहुँची उसके पश्चिम द्वारपर एक सुवर्णलेख है जिसमें 'यहां, राजवंशियोंको पवित्र राज दंड मिलताहै' लिखा है।

दुपहरके लगभग सवारी गिरिजेमें दाखिल हुई। द्वारपर पहुँचतेही गिरजेका प्रधान राजचिह्न और पादरी बाइबल लेकर आया। वहां पर रानीका पाद-प्रक्षालन हुआ रथमेंसे उतरकर श्रीमती कपड़े बदलने के कमरेमें गई। वहां का बडा भव्य मंडप था। बीचमें पाषाणकी एक कुरसी थी। इसके पास एक पाषाणथा। इसी पर प्रथम एडवर्ड राजाके समयसे पट्टाभिषेककी क्रिया होतीहै राजसिंहासनके इधर उधर अमीर उमरावोंकी कुरसियां थीं

मध्याह्नके समय सब लोग अपने २ स्थान पर खड़े रहे। प्रथम अभिषेक स्थलपर वेस्ट मिन्स्टरका पादरी और रानीके प्राइवेट कर्मचारी दाखिलहुए। उनके पीछे लार्ड प्रिवि सील, लार्ड प्रेसीडेंट आफ् कौंसिल, आयर्लैंडके लार्ड चैंसलर, यार्कका पादरी, इंग्लैंडका लार्ड चैंसलर और कैंटरबरीका प्रधान पादरी था। इनके बाद जुदे २ राजाओंके प्रतिनिधि और राजवंशी आये। रूमका एलची इस चाकचक्यको देखकर भौंचक होगया। अंतमें ड्यूक आफ् वेलिंग्टन तीन पादरियों सहित बाइबल, पात्र और चौकीलेकर आये। रानीजी उससमय सुनहरी धारीदार गौन पहने हुएथीं। इस गौनको इंग्लैंडके उमराओंकी आठ कन्यायें उठायेंथीं

श्रीमतीके मंडपमें पहुँचतेही सब लोगोंने खडेहे कर झुक२कर सलामें की। फिर गज गतिसे आप गायकमंडलीका मुजरा सुनती हुई आगेबढीं। गिरजेके विद्यार्थियोंने "जुग जुग जियो विक्टोरिया रानी...."का गीत गाया। नियत स्थानपर पहुँचतेही रानीने घुटने टेककर ईश्वरोपासना की। फिर मुख्य सिंहासनपर बैठनेके बदले आप एक साधारण कुरसीपर बैठीं॥

अब कार्यका आरंभ हुआ। राज्यके मुख्य २ अधिकारी एक २ करके धर्म-क्रियाके स्थानपर गये। वहां जाकर उन्होंने कहा—"राजपुरुषो, आपको विदित है कि, राज्यकी वास्तविक स्वामिनी रानी विक्टोरिया हैं। उनके पवित्र अभिषेकके कार्यमें आप इकट्ठे हुएहैं। उसे आप स्वीकार करो"। प्रत्येक व्यक्तिके कथनके साथही "चिरजीयो विक्टोरिया रानी" और "परमेश्वर विक्टोरिया रानीकी रक्षाकरै" का आनन्द गर्जन होता था। इससमय प्रधान पादरी चारों दिशाओंमें फिर२ कर प्रार्थना करता जाता था। इसीतरह श्रीमतीको भी प्रत्येक बार करना पड़ता था। इससमय बाइबल और जलपात्र लिये पादरी आ पहुँचे। कैंटरबरीके पादरीने अन्य पादरियोंकेसाथ मिलकर स्तोत्रपाठ किया। और सबने पवित्र जलसे रानीके शिरपर आशीर्वादका अभिषेक किया। रानीजीने

प्रत्येक धर्मगुरुको प्रणामकर एक २ सुवर्णमुद्रा भेटकी । सबने मिलकर

"चिरजीयो विक्टोरिया रानी"

का गान किया । फिर उसजगह राजचिह्न लायागया । प्राचीन और नवीन धर्मपुस्तकोंमेंसे थोडे भजन गायेगये । उन भजनोंका आशय यह था कि राजा ईश्वरका अंशावतार है । और इसलिये राजाको न्याय और नीतिके अनुसार वर्तना चहिये । एक पादरीने मृत राजाके गुणोंका गान किया । और उनका अनुकरण करनेका राजकुटुंबको प्रबोध किया । इसके अनंतर राज्य कार्यमें न्याय और सद्गुणोंका बर्त्ताव करनेके श्रीमतीको शपथ दियेगये । शपथ देनेसे पूर्व ईसाइयोंकी धर्मपुस्तकमें से जितने भजन रानीको सुनायेगये उनको उन्होंने बहुत ध्यानपूर्वक सुना । ताऊके गुणोंका प्रसंग आतेही श्रीमतीका हृदय भर-आया परंतु इससमयपर आंसू गिराना अशुभ समझ, आपन शिर झुका-कर आंसुओंको छिपादिया । प्रार्थना समाप्त होतेही पादरीने रानीके पास जाकर कहा:—

"रानी क्या आप शपथलेनेमें प्रसन्न हैं ॥ "

रानी—" हां मैं राजी हूं ! "

पादरी—" क्या आप ग्रेटब्रिटेन और आयर्लैंडकी प्रजाका और इनके अधिकृतराज्यका न्याय और आईनके अनुसार शासन करनेके अंतःकरणसे शपथ खाना चाहती हैं ? "

रानी—(विनीत भावसे)—" हां मैं ऐसाही करनेका प्रण करती हूं ! "

पादरी—"क्या आप अपनी शक्ति, बर्त्ताव और आईनके अनुसार कार्य करनेमें दयापूर्वक न्याय करैंगी ? "

रानी—" हां "

पादरी—" तब क्या आप अपनी शक्तिके अनुसार ईश्वरके आईन, और प्रोटेस्टेंट धर्मके नियत नियमोंका पालन करैंगी ? और क्या आप पादरियों और गिरजोंकी रक्षा कर उनके स्वत्वोंका पालन करैंगी ? "

रानी—(दृढता पूर्वक, स्पष्टतासे)—" इन सब बातोंका मैं प्रणकरती हूं ! "

इतना होतेही लार्ड चैम्बरलैनने रानीके हस्तकमलमें एक तलवार दी । उसे हाथमें लेकर रानीने बाइबलपर हाथ रक्खा और प्रधान पादरीको दंडवत प्रणाम कर कहा—" यहां पर मैंने अभी जो कुछ कहा है उन वचनों और प्रति-

ज्ञाओंको मैं यथान्याय और सद्बुद्धिसे उचितरीतिपर पालन करूंगी । परमेश्वर मेरा सहायकहो" । यह कहकर प्रतिज्ञापत्रपर हस्ताक्षर किये । फिर उसका चुंबनकर घुटने टेककर प्रणाम किया और गिरजेके गायकोंने ईश्वरकी स्तुति और रानीकी विजयका गान आरंभ किया ।

धर्मकार्यकी समाप्ति होनेपर राजकीय कार्य आरंभहुए । रानीने राजा एडवर्डकी कुरसीपर आसनलिया । चार नाइट आफ गार्टर पदवीवाले सरदारोंने एक सुवर्णमय वस्त्रके चारोंकोने पकड़कर श्रीमतीपर छायाकी । वेस्टमिन्स्टरके पादरीने एक तेलभरा पात्र उठाकर उसमेंसे सुगंधित तैल एक चमचेमें लिया और उसे श्रीमतीके शिरपर डालकर उसकी आकृति क्रूस (ईसा पैगंबरके फांसी चढने का चिह्न) कीसी बनाकर कहा—"जैसे राजा, पादरी और पैगंबरोंका अभिषेक हुआथा उसीप्रकारसे तेरा हुआहै । सोलोमनने जेडोकके राजाका जैसे अभिषेक कियाथा उसी तरहसे पवित्र तेलसे तेरा हुआ है । परमेश्वरने आशीर्वाद देकर इसलोककी रक्षा करनेके लिये तुझको योग्य गिनाहै । यहां तू पिता पुत्र और पवित्रात्माके नामसे राज्यकर" इसकेबाद राजमुकुट और राजदंड प्रदान करनेके लिये मंडपमेंसे सात पादरियोंने मिलकर दोनोंको उठाया । मुकुट रानीको पहनायागया । पहनतेही "ईश्वर रानीकी रक्षाकरै" के गानसे गिरजा गूंजउठा । अमीर उमराव और उनकी स्त्रियोंने राजमुकुटके नजरें की । घंटानाद होतेही एक साथ तोपोंकी गर्जना होनेलगी ॥

एक नार्वेनिवासिनी स्त्रीने वहांसे हाथका सहारा देकर रानीको उठाया । श्रीमती अब जाकर मुख्य सिंहासनपर विराजीं । उनके हाथमें प्रथम बायबल और फिर राजदंड रक्खा गया । दंड हाथमें आतेही एक २ करके सब लार्ड लोगोंने श्रीमतीके पास जाकर सदा राजभक्त रहनेके शपथ खाये और रानीके मुकुटपर हाथ लगाय बायबलपर चुंबन करने बाद अपनी२ जगहपर आ बैठे । वृद्ध लार्ड रोली अभिवंदनके लिये रानीके पास आते २ गिरनेलगे तब श्रीमतीने सहारादे-उनको उठाया । इसकार्यके समाप्त होतेही गिरजेके गायक लोगोंको पदक दियेगये । सुंदरगीत और वाद्यके मध्यमें नारफाकके ड्यूकने श्रीमतीके हाथमें दोराजदंड रक्खे

अंतमें रानी, प्रधान पादरी (केंटर बरीके आर्चविशप) और लार्डचेंबरलेन को लेकर, मंडपमेंगईं । वहां श्रीमतीको बाइबल सुनायागया । रानीने सोनेकी मुद्राओंसे भरीहुई एकथैली भेटकी । राज्यका असलमुकुट उतारकर अपना नवीन मुकुट शिरपर धारण किया । वहांसे उठकर रानी राजा एडवर्डके गिरजेमें गई ।

यद्यपि बराबर तीनघंटेके परिश्रमसे श्रीमती थकगईथी परंतु लोगोंके आशीर्वाद और हर्षनादसे उन्हें बिलकुल थकावट मालूम न हुई और वह बराबर राजभक्त प्रजाको सलाम करके उन्हें धन्यवाद देनेमें न हटीं । और कार्य समाप्तकर, जिस तरह आई थीं उसीतरह राजमार्गमें होकर पीछी अपने निवास स्थानपर पधारीं । मार्गमें रानीका जय जयकार होने लगा ।

उसी रातको ड्यूक आफ् वेलिंग्टनने एक बाल दिया । नगरमें आतिश-बाजीकी धूममची। नगरमें बडी भव्य रोशनी हुई और कितनेही दिनोंतक जब श्रीमती बाहर निकलतीं तबही लोग उनपर पुष्पवृष्टि करतेरहे । राज्याभिषेकके कार्यमें ६९४२१० ॥।=)४ खर्च हुआ । चौथे जार्जके समय दशलाख रुपये व्यय हुए थे । रानीसे लोगोंकी भक्ति इतनी बढगई थी कि एक स्काटलैंड वासी मनुष्य श्रीमतीका हस्त चुंबन करने आया और चुंबन कर२ के श्रीमतीको सताने लगा और जबतक राजकर्मचारीने उसे वहांसे न हटाया वह न डिगा । चार दिनतक हाइड्र पार्कमें मेला हुआ । नगरके नाटक और मेले तमाशे रानीकी आज्ञासे दर्शकोंके लिये विना मूल्य खुले रक्खे गये । राज्यघरमें इसका महोत्सव हुआ ।

इस उत्सवके थोड़ेकाल पीछे एकदिन श्रीमती राजकीय गाडीमें चढ़कर कहींको जारहीं थीं । मार्गहीमें एक मनुष्य भीडमेंसे निकलकर रानीके मुख पर एक पत्र फेंककर भागा । अपराधी पकड़ लिया गया । और स्वल्पदंडके पश्चात् उसकी छुट्टी हुई । उन दिनोंमें इसप्रकारकी अनेक घटनायें हुई परंतु उनका यहां उल्लेख करना आवश्यक नहीं है । केवल एकबातही ऐसी हुई है जिससे चित्तको हँसी आये विना नहीं रहती । एक बार श्रीमती हाइड्र पार्कके बागमें टहल रही थी । इतनेमें एक व्यक्ति घोड़ा दौडाता हुआ कभी हंसता और कभी तरह २ के संकेत करता हुआ इधर उधर घूमने लगा । कर्नल केवें-डिशने इसे पकड़कर पुलिसके हवाले किया और वहां उसपर ५ पौंड दंड हुआ और २०० पौंडकी दो जमानतें लीं गईं ॥

अध्याय १३.

शयन गृहका जाल ।

पट्टाभिषेकके धूमधाम समाप्त होनेके बाद कुछ कालतक सब काम शांति पूर्वक चलता रहा। एकाएक राज्य प्रबंधमें गड़बड़ खड़ी हुई । केनाडामें युद्धकी संभावना हुई । इंग्लैंडमें असंतोष फैलनेलगा और प्रधान मंडलपरसे प्रजाका

उठगया । इसी अवसरमें लेडी फ्लोरा हेस्टिंग्सके अभियोगकी हलचल मचगई । रानीने इस हलचलको मेटनेका बहुतेरा प्रयत्न किया परंतु कुछ सिद्धि न हुई । प्रतिकूल पक्षने युवती रानीके कलंक लगानेका प्रयत्न किया । लेडी फ्लोरा का अभियोग जांचनेके लिये रानीने मेलबोर्नको नियत किया । जांच करते२ही वह स्त्री मरगई और इस कारणसे लार्ड मेलबोर्नपर औरभी संदेह बढ़गया ।

रानी विंडसरके राजप्रासादमें निवासकर नित्य प्रातःकालके आठबजे उठती और वहीं नास्ता लेती थीं । प्रत्येक कामके कागजोंकी वह स्वयं जांच करतीं और दिनके ग्यारह बजे लार्ड मेलबोर्न वहां आकर आवश्यक काग़ज़ पेश करते थे । दिनके दोबजे लार्ड मेलबोर्नको साथ लेकर घोड़ा दौडाने जाती और लौटनेपर बालकोंसे ठठोल करने और गाने बजानेमें समय विताती थीं । रात्रिके भोजनके समय लार्ड मेलबोर्न और एमेरिकाके प्रतिनिधि अवश्य उपस्थित रहते थे । रात्रिके ग्यारह बजे सोनेसे पूर्व अपने घरबारकी रिपोर्ट सुनती और देखभालके बाद सुखकी निद्रा लेती थीं ॥

यद्यपि लार्ड मेलबोर्नकी सम्मति और बर्त्तावको श्रीमती बहुत पसंद करती थीं और उन्हींके कथनानुसार चलतीं थीं और उनके समान श्रीमतीके लिये कोई उत्तम और न्यायी मंत्री न था परंतु यह बात उनके विरोधियोंको बुरी लगती थीं और इसीलिये वे कहा करतेथे कि रानी मेलबोर्नके हाथकी गुडियाहै और जिस दिन वह कामसे अलगहोंगे रानीको प्रबंध करनेमें बड़ी कठिनता पड़ैगी । केनेडाके युद्ध और मेलबोर्नपर पार्लियामेंटकी आशंका के कारण पार्लियामेंटमें गड़बड़ मचगई । लार्ड मेलबोर्नने ७ मई सन्१८३९ ई० को इस्तीफ़ा देदिया । श्रीमतीने सर राबर्ट पीलको प्रधान अमात्य बनाया । उसी समय नवीन प्रधानने कहा कि नवीनमंत्रिमंडलपर विश्वास प्रकट करनेकेलिये अपनी कितनीही सहेलियोंको पदच्युत करदीजिये । ये सहेलियां लार्ड मेलबोर्नके पक्षकी थीं । इससे बात बढ़गई । सरराबर्ट पीलने इस विषयमें एक चाल कीथी । चाल व्यर्थ गई । उसी दिनसे इस चालका नाम "शयनगृहका जाल (Bed chamber plot)" प्रसिद्ध होगया । इस चालमें ड्यूक आफ् लिंगट भी संयुक्त थे । इसका नाम "शयनगृहका जाल" इसीकारणसे पडाहै कि इसमें रानीकी सखियोंको निकालनेका प्रयत्न कियागया था । युवती रानीने किसीकी कुछ न सुनी और जितने २ प्रमाण और तर्क श्रीमतीसे कियेगये उनका आपने यथातथ्य उत्तर दिया । अंतमें श्रीमतीने सर राबर्ट पीलसे स्पष्ट कहदिया कि "मानलो कि आपही पहलेसे मुझे सम्मति और सहायता देनेवाले होते और आपही के पक्षकी सहचरियों मेरे पास रहती

तो क्या मैं उन्हें दूसरे पक्षके कहनेसे निकाल देती।स्मरणरक्खो कि मैं लार्ड मेलबोर्नके लिये आपको कुछ कहने न दूंगी । ”

यह बात पुराने मंत्रिमंडलको विदित हुई । वे लोग लार्ड मेलबोर्नके यहां इकट्ठे हुए । इसविषयमें श्रीमतीका एकपत्र मेलबोर्नके नाम गया जिसमे लिखाथा कि “आप किसी बातका डर न करें । मैं सब बातें शांतचित्तसे सुनूंगी । आज वे लोग मेरी सखियोंको निकलवा देना चाहते हैं।कल्ह मेरी नौकरनियोंको निकालना चाहेंगे । वे लोग मुझे अबोध बालिकाकी तरह सिखाना चाहते हैं । परंतु मैं उन्हें बतलादूंगी कि मैं इग्लैंडकी स्वामीनी हूं ।” मेलबोर्न पत्र पढ़तेही उछल पड़े । उहोंने अपने मित्रोंसे कहा कि“ रानी एलिजावेथसे भी अधिक दृढ औंर सप्तम हेनरीसे अधिक शक्तिमती हैं ।” पीलने रानीकी दृढता देखकर नवीनमंत्रिमंडल संगठन करनेका विचार उठा रक्खा । कानोकान नगरमें बात फैलतेही रानीकी मुक्तकंठ से प्रशंसा होनेलगी । लिबरल और कंसर्वेटिवदलमें आपसकी लड़ाई मचगई । पीलने फिर सहचरियोंको नहीं बरन कईएकको अलग करनेका अनुरोध किया । रानीने स्पष्टकहदिया कि—“मैं लार्ड मेलबोर्नसे कदापि अलग न होऊंगी, वह मुझे कभी बुरी सम्मति नदेंगे और उनका त्याग मुझसे कभी न होसकैगा।“इस विवाद का परिणाम यह हुआ कि पीलके दलने इस्तीफा दिया और मेलबोर्न फिर प्रधान अमात्य हुए ॥

ऐसी दृढता और बुद्धिमानीसे उन्होंने मंत्रिवर्गका दमन कर उनसे विजय पाया । राजकर्मचारियोंमें उनका आतंक फैलगया और प्रजाकी भक्ति दिन २ बढ़ने लगी ॥

अध्याय १४.

राजकुमार एलबर्ट से प्रणय ।

जिस शुभसंवत्सरमें रानी विक्टोरियाका जन्महुआथा उसीमें अर्थात् २६अगस्त सन् १८१९ ई० को सैक्सकोबर्ग और शेलफील्डके ड्यूकके पुत्र राजकुमार एलबर्ट का जन्महुआ । इनका जन्मस्थान सेसन्यू कोबर्गसे चारमील है । यहां ड्यूक उष्ण कालमें निवासकिया करते थे । यह उन सैक्सन लोगोंके वंशधर थे जिन्होंने अपने देशकी स्वतंत्रताको जर्म्मनीवालोंके आक्रमणसे बचानेमें नामकर यूरोप के इतिहासकी वीरमंडलीमें स्थान पाया था।इनके दो बड़े भाई थे । दुर्भाग्यवश इनके जन्मके पश्चात् इनके पिता माता में परस्परका मनमुटाव होगया जिसका

परिणाम यह हुआ कि दोनोंने विवाहबंधन तोड़दिया। और इसलिये राजकुमार एलबर्टको माताका संग त्यागकर पिताके पास रहनापड़ा।यहबाल्यवस्थासे ही कोमल, सुंदर, अशक्त और तीक्ष्ण बुद्धिमान् तथा चतुर थे। इनकी दादीने इनका पालन पोषण किया था। छः वर्षकी उमरसे इन्होंने अपनी डायरी लिखना आरंभ करदियाथा। डायरीमें एक दिन लिखा कि "आज खेल कूदमें दिन बिताया और बडे भाईको कुश्ती मारी" दूसरे दिन "हारखाई परंतु कल फिर लड़ना" लिखा। राजकुमार चपल और वीर थे। छः वर्षके वयसे इनकी अशक्ति जाती रही थी। एलबर्टकी दादीने बचपनेसेहि इनकेसाथ विक्टोरियाका मेल जोल करादिया था। एलबर्टकी दादी कोबर्गकी डचेज् अर्थात् रानी विक्टोरियाकी माता डचेज् आफ्केंट्की माता अर्थात् विक्टोरियाकी नानी थी। तरुण राजकुमारको नानाप्रकारकी शिक्षा दीगई और पंद्रह वर्षकी उमरमें वह बड़े पुरुष गिने जानेलगे। राजकुमार जिस समय बारहवर्षका हुए इनकी दादीका देहांत होगया। इन्होंने साइंस, साहित्य, राजनीति, संगीत, और नानाशास्त्रोंमें अच्छी योग्यता प्राप्तकर देशाटन किया। होलेंड, जर्मनी, आस्ट्रिया और इंग्लैंडके प्रवासमे इनकी बुद्धि खिल निकली। बेरन स्टाकमरके साथ इन्होंने इटाली और स्विटजर लैंडका अवलोकन किया।इससे पूर्व यह बोनगरमें पूर्ण शिक्षा समाप्त कर चुके थे। बेलजियमके राजा एलवर्टका विक्टोरियासे विवाह करनेकी बहुत दिनसे इच्छा रखतेथे किन्तु इंग्लैंडके राजा चौथे विलियमने यह बात स्वीकार नहीं की थी। उससमय रानी विक्टोरियासे विवाहकरनेके पांच उम्मेदवारथे किन्तु उन्होंने निश्चय कर लियाथा कि "जो विवाह करूंगी तो प्यारे एलबर्टसेही ॥"

महारानीके पति राजकुमार एलबर्ट ।



सन् १८३९ ई० के वसंतऋतुमें एकदिन राजकुमार आखेट करने गये थे । एरनवर्ग स्थानके अपने कमरेमें राजकुमारने लौटतेही अपनी बहन (फूफीकी लड़की) विक्टोरिकाया चित्र देखा । जैसे पूर्णिमाका चंद्रमा राहुसे ग्रसागयाहो, जैसे हरिण भिल्लिनियोंके गानपर मोहित होगयेहों और जिसतरह प्रणय सुखको न जाननेवाले अज्ञान यौवनक पुरुषके चित्तपटलपर प्रथमवार प्रियतमाके दर्शनका संस्कार हुआहो उसी तरह राजकुमार उस चित्रपटमें रानी विक्टोरियाका मंद२ मुसक्यान और मदभरी चितवन देखकर पानी होगये । मंत्रमुग्ध सर्पकी तरह एलबर्ट कभी आंखें बंद करते कभी अंगडाई लेते, कभी लज्जित होते और कभी प्रेमके अगाधसमुद्रमें गोते लेतेथे । राजकुमार जिससमय बाहरगये उनके महलमें विक्टोरियाका चित्र नथा । रानी विक्टोरियाकी आज्ञासे सेवकोंने चित्र ऐसेही ढंगसे अवसर साधकर रक्खा था जिससे थके हुए राजकुमारकी बाहरसे आनेमें एकाएक दृष्टिपडे।रानीकी युक्तिका प्रणयमें बहुत कुछ प्रभावहुआ। सैरसे थके हुए राजकुमारके चित्तमें रानीकी मोहिनीमूर्त्तिने इसप्रकार निवास करलिया जैसे मूर्तिकोहृदय में स्थान देनेके लिये थकाकर उनके शरीरके बंधन ढीले कियेगये हों । चित्रके साथही राजकुमारको रानी विक्टोरियाका एक पत्र मिला । पत्रमें इंग्लैंड जानेका निमंत्रण पाकर अपने ज्येष्ठ बंधु अर्नेस्टके साथ इंग्लैंडको प्रयाण किया । और वहां पहुंचकर विंडसरके राजप्रासादमें डेरा दिया ॥

उस समयकी रूपलावण्यता देखकर रानी विक्टोरियाका चित्त एलबर्ट में जाबसा । उन्होंने अपने मामा लियोपोल्डको लिखा–" एलबर्टका सौंदर्य चित्ताकर्षक है । वह परमप्रीतिवर्द्धक और सुंदर है । थोड़ेमें यही कहनाहै कि बड़ाही मनमोहन है । " इतना लिखते २ रानीको बोध हुआ कि मेरे हार्दिक बिचार अनवसर पर प्रकट हुए जातेहैं इस लिये उन्होंने पत्रके अंतमे लिखा कि–" दोनों भाई मिलनसार हैं । दोनो इंग्लैंडमें रहें तो बहुत अच्छाहो । " जबतक लंडनमें राजकुमार एलबर्ट रहे रानी नित्य उनसे मिलाकरतीं थीं । राज माता और लार्ड मेलबोर्नको साथ लेकर दोनों नित्य वायुसेवनको जाते नित्य सायंकालको साथ भोजन करते और सप्ताहमें तीन बार नाच होता जिनमें रानी अन्य राजपुरुषोंको छोड़कर राजकुमार एलबर्टके साथ नाचतीं । एक दिन रानीने अप शिरोरत्न भेंटकिया । इसे पाकर राजकुमारको प्रणयका

पक्का निश्चयहोगया जबतक राजकुमार इंग्लैंडमें रहे रानीने उनके साथ रानी- पने का बर्ताव न किया किन्तु जैसे एक साधारणस्त्रीका साधारण पुरुषके साथ प्रणयहो उसीतरह रानी रहनेलगीं ॥

इस समागममें रानीने राजकुमारकी इच्छाकी टटोल करनेकेलिये एक- दिन उनसे पूंछा—"आप इंग्लैंडको कैसा चाहते हैं ?" इसके उत्तरमें राजकुमा- रने कहा—" बहुतही अधिक " एकबार रानीने फिर पूंछा—" आप इंग्लैंडमें रहना पसंद करतेहैं ?" यह बात पूंछते समय रानीकी आंखेंनीची, चित्त स्थकित और शरीरमें सनसनाहटथी। राजकुमार सुनतेही दंग होगये । प्रेमाकुल होकर उन्होंने कहा—"निः संदेह"—सुनतेही रानी बोली—"तब यहांका निवास करना आपके ही हाथ है" इतना कहकर अपने प्रियतमको नेत्रवाणसे बद्धकर रानी वहांसे सटकगई ।

प्रणयका आरंभ पुरुषकी ओरसे होताहै । पुरुषही स्त्रीका इसकार्यके लिये प्रार्थी होताहै किन्तु इस प्रणयमें विपरीतता हुई । प्रणयके प्रकाशितहोने पूर्व ग्लो- सेस्टरकी डचेज् रानीसे मिलनेगई। उससे रानीने कहाकि"मैंही अपनाविचार कल प्रकट करूंगी" लेडीने रानीकी हँसी की । कहनेलगी—" यह बात स्त्रीजातिके हृदय की गंभीरताके विरुद्ध है।"रानीबोली—"मैंने इससेभी अधिक निर्बलताका कार्य कियाहै ।" लेडीने पूंछा—" वहक्याहै?" रानी—"वह यही है कि मैंने अपना मन राजकुमार एलबर्टको देदिया है ॥"

अध्याय १९

प्रणयका प्रकाश ।

१५अक्टूबर सन् ३९ ई० का प्रभात राजकुमार एलबर्ट केलिये सुप्रभातथा । "राधा तू बड़ भागिनी कौन तपस्या कीन । तीन लोक जाके बसे ते तेरे आधीन।"कि- सी कविके इस मर्म वाक्यकी सत्यता करनेकेलिये राजराजेश्वरी विक्टोरिया राजकु- मार एलबर्टको उसदिन अपना प्राणेश्वर बनाना चाहतीं थीं । राजकुमार दुपहरको आखेटसे लौटे । महलमें घुसतेही रानीने उनको निमंत्रणदिया । राजकुमार दबे- पावं रानीके भवनमें गये । उस समय रानी अकेलीं थीं । प्रियतम प्रियतमाके प्रथम संयोगसमयमें जैसे दोनों अवाक्रहतेहैं, जैसे दोनोंके हृदयकी बातें

कंजूसके धनकी तरह बाहर नहीं निकलतीहैं उसीतरह परस्पर प्रेमालाप न हुआ। रानीनेही प्रथम प्रेमका बीजडाला था और रानीही पौदेको उगानेमें समर्थहुई। अपने मनकी बात प्रकाशितकर रानीने स्त्रीत्व नहीं किन्तु राज्यत्वका शौर्य संपादनाकिया। टूटे फूटे शब्दोंमें रानीने अपनी इच्छा सुनाई। जिस हस्तकमलका चुंबन करनेके लिये बड़े२ अमीर तरसते और अपनी शोभा समझतेहैं,जो शत दंड धारणकर शत्रुका दमन करने; दुराचारियोंको दण्डदेने और सज्जनोंकी रक्षाके लिये पुरुषके कठोर हस्तसेभी कठोरहै वह अपनी कठोरता कुलिश को प्रदानकर पुष्पसमान कोमलता धारण करता हुआ प्रियतमके हाथमें जापहुंचा वही हाथ आजएक अबला वास्तवमें बलहीना स्त्रीका हाथ होगया।जिस मस्तकपर राजमुकुट धारण होताहै जिसके आगे बड़े२राजा महाराजा शिर नमातेहैं वही शिर शरीरकी सनसनाहट और हृदय कंपके साथ प्रियतमके कंधेपर पहुंचा। और एक राज-राजेश्वरीने राजकुमारके हृदयमंडलमें निवासकर भूमंडलपर राज्य विस्तृत करनेकी प्रतिज्ञाके साथही अपने हृदयमंदिरका राज्य राजकुमारको देदिया मानो रानी-के हृदयके साथही ब्रिटिश साम्राज्यके राजकुमार राजा बनगये। यह समय बडा अद्भुत था। जो लोग प्रणयकी कसौटीमें कसेगयेहैं उनके अतिरिक्त इस सुखको जाननेकी शक्ति किसीमें नहीं है॥

रानीके प्रियमित्र बेरन स्टाकमोरसे थोडेसमय पूर्व रानीने कहाथा।कि "अभी कुछ वर्षोंतक मैं विवाह करना नहीं चाहती हूं।" इसप्रतिज्ञा भंग होनेसे डरते २ रानीने उसे एक पत्र लिखाः—"मैं अपने अपराधके लिये आपको क्या लिखूं। कुछ नहीं जानती हूं। परंतु मुझे आशा है कि आप इसबातको क्षमाकरेंगे। एलबर्ट ने मेरा हृदयजीतलियाहै। आज प्रातःकाल सब ठहराव होगयाहै। मुझे निश्चय है कि उनसे मुझे और मुझसे उन्हें अवश्य सुखहोगा।" इसीतरह राजकुमारने अपनी दादीको यह पत्र लिखाः—रानीने मुझको अपने पास एकांत बुलाकर परम प्रीतिपूर्वक कहाकि "आपने मेरा हृदय जीतलिया है। और जो मेरे आप जन्म संगाती बननेमें हानि उठा। वैंतो मैं आपको सुखदेनेमें तत्पर हूं क्योंकि वह मानती है कि मैं उनसे संबंध करनेमें अपने सुखको हानि पहुंचाता हूं। और उनका कथन यह हुआ कि वहमेरे योग्य नहीं हैं। उनके प्रेम मय संभाषणने मेरे ऊपर जादू करदिया मेरामन विवलगया। और मैंने अपना आप उनके अर्पण करदिया" रानीने अनेक बार कहाथा कि "मेरेलिये मेरे एलबर्टने बहुत हानि उठाईहैं।" यह बात आश्चर्यजनक है! आश्चर्य इसबातका कि एक देशकी स्वामिनीसिज

मनुष्यका पाणिग्रहण करै उसकी इस विवाहसे हानि क्योंकरहुई। परंतु रानीका कथन यह था कि उन्होंने मेरेलिये अपना घरबार, देश, माता पिता छोड़कर विदेशमें निवास किया है। और साथही उनको एक अपरिचित राज्यका बोझा उठाना पड़ा है। इसके सिवाय स्त्रीका संतोषकर उसका समाश्वासन करना अलग है। इससंयोगसे पीछे जितने दिन राजकुमार लंडनमें रहे दोनोंने बहुतही सुख से काल यापन किया। थोड़े समयके अनन्तर राजकुमारने स्वदेशको गमन किया॥

लोगोंमें ऐसी गप्प उड़ी कि रानीने इससंबंधकी बात पहलेसे किसीको नहीं जतलाई यहांतक कि लार्ड मेलबोर्नकोभी इसकी खबर न हुई परंतु रानीकी दिन चर्यामें लिखाहै कि सगाईके प्रथम दिन अर्थात् १४ अक्टूबरको रानीने मेलबोर्नसे कहाथा। मेलबोर्न सुनकर बहुतप्रसन्न हुए और उन्होंने कहाकि "इतना स्मरण रखिये कि स्त्री किसीभी स्थल और स्थितिमें अकेली शोभा नहीं पाती है। आपको इस कार्यसे बहुत सुख होगा।"

बेलजियमके राजा इस संबंधमें बहुत अनुराग रखते थे। उन्होंने इस बातके समाचार पाने पूर्व रानी विक्टोरियाको लिखा थाकि "जैसे २ आपका इसके साथ सहवास बढ़ता जायगा आप उसको अधिक २ पसंद करने लगेंगीं। एलबर्ट योग्य साथीहै। उसकी रीति भांति, और रहनसहन ऐसा उत्तमहै कि कोईभी उससे अलग होना नहीं चाहता। मुझको वह बहुत प्रियहै। उसे अपने पास रखनेकी बड़ी उत्कंठा है। वह बड़ाखिलाड़ी चतुर और शूर है। वह विना कांटेका गुलाब है।" इसके उत्तरमें रानीने बेलजियमके राजा लियोपोल्डको जो उनके मामाथे एक पत्र लिखाः– "प्रिय मातुल, मेरे हितमें आपका सदाध्यान रहता है इसलिये इसपत्रको पाकर आपको अधिक आनन्दहोगा। मैंने दृढ निश्चय कर अपने विचार आज प्रातः एलबर्टसे कहदिये हैं। उन्होंने यह आनन्द दायक समाचार सुनतेही जो प्रेमदर्शाया उससे मुझे बड़ाहर्ष हुआ है। वह योग्यपतिहैं और मुझे आशाहै कि मैं बहुत सुख पाऊंगी। एलबर्ट मुझे सबसे अधिक प्रियहै। और उन्होंने मेरेलिये जो हानि उठाई है उसका मैं बदलादूंगी। यह वृत्तान्त अर्नेस्टके अतिरिक्त और किसीको विदित न होना चाहिये क्योंकि पार्लियामेंट खुलने पूर्व मैं इसबातको प्रकाशित नहीं करसकती। लार्ड मेल्बोर्नका मेरे साथ सदाकी तरह स्नेह है। एलबर्टने इस बातको स्वीकार कियाहै और फरवरीमें पार्लियामेंट खुल[illegible] विवाह स्थिर करूंगी।" इ[illegible] उत्तरमें मामाने बडी प्रसन्नता प्रकटकी।

जैसे रानी विक्टोरियाको योग्यवर मिलनेका हर्षथा उसी तरह एलबर्टभी गुणवती रानीको प्राणेश्वरी पाकर फूले अंग नहीं समाते थे। अपनी प्रियतमाका वारंवार प्यारी विक्टोरियाके नामसे संबोधन करतेसमय उनके हर्षका ठिकाना नहीं रहता था। उन्होंनेबैनर स्टाकमोरको लिखाथाकि–"मैं रानीके साथ संबंध करनेसे अपनेको बड़ा भाग्यशाली समझता हूं।" राजकुमार बड़े सज्जन, चतुर, और प्रजा प्रिय थे। थोड़ेही कालके इंग्लैंडनिवासमें उन्होंने लोगोंके मन जीतलिये। उन्होंने स्वयं कहाथा कि अब मैं बड़ा अमीर बनूंगा। आपके सन्मान करनेसे मेरी पदवी बढ़ेगी। उनका दूसरी मातासे यह उल्लेख था कि "मैंने अपने जीवनमें अनंत जनपर उपकार करना निश्चय किया है। इससे मुझे बहुत कुछ सहायता मिलेगी।"

सुखपूर्वक लंडनमें निवास करनेबाद जब १४ नवंबरको राजकुमार एलबर्ट अपने भाई सहित बिदाहुए तो रानीको पतिवियोगका प्रथमवार असह्यदुःख हुआ॥

संयोगके अंतमें वियोग और सुखके अंतमें दुःख होता है। अनेक सप्ताहतक प्रियतमसे प्रेमालाप करनेके अनन्तर रानीको पतिवियोगका कष्ट हुआ। पतिके विदा होतेही उन दोनोंकी आंखोंमें प्रेमाश्रु बहने लगे। न अब उनका खेल कूदमें दिल लगताथा और न उन्हें गाना नाचना सुहाता था। रानीको दिन रात एलबर्टकी और एलबर्टको विक्टोरियाकी लो लगी रहतीथी। एक दूसरेके चित्रोंको निरखकर उनका आलिंगनकर चुंबनकर और चित्रोंसे प्रेमालापकर कालयापन करने लगे। रानीने अपनी ताईको लिखाः–"मेरा प्राणवल्लभ जो दिन रात मेरे समीप रहताथा वह मोहिनी मूर्त्ति मुझे छोडकर चलदी। यदि मेरे पंख हों तो मैं उसके पास उडकर पहुंचूं।" एलबर्टने प्यारीको लिखा–"मुझे अनेक आनन्द दायक वस्तुऐं मिलती हैं परंतु जिसने मेरा मन हरण किया है उसके विना मुझे चैन नहीं है"। इस प्रकारके परस्पर पत्र व्यवहारसे वियोग जनित दुःखको प्रकाशित कर दोनोंने कालक्षेप किया॥

अध्याय १६

पार्लियामेंटकी सम्मति और राजकुमारका सत्कार ।

यद्यपि इंग्लैंडकी प्रजा सामाजिक बातोंमे स्वतंत्रहै। स्त्री और पुरुषको विवाहके लिये किसीकी आज्ञा लेनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती है परंतु राजराजेश्वरी विक्टोरियाको अपना संबंध राजकुमार एलबर्टसे करने पूर्व पार्लियामेंटसे आज्ञा लेनी पड़ी। रानी अपनी माता सहित विंडसर केसलसे चलकर बकिंगहाम

राजमहलमें आई और २३ नवंबरको अपना मंत्रिमंडल इकट्ठा किया । वहांपर वृद्धपुरुषोंके समक्ष एक युवतीका पतिके विषयमें वार्त्तालाप करना स्त्रियोंकी स्वाभाविक लज्जा प्रियताके विरुद्धथा । रानीकी भी इसी कारणसे थोड़ी देरतक हिम्मत नहुई। पार्लियामेंटकी आज्ञा विना रानी इसकार्यको कर नहीं सकती थीं। प्रियतमका प्रेम उनको आतुर किये डालता था। लज्जाके किंवाड जिह्वाको प्रेम संवाद प्रकाशित करनेसे रोकते थे । अंतमें दबी जबानसे रानीने अपने विचार प्रकट किये। रानी उससमय हीरेजड़ी पहुंचीमें राजकुमारका चित्र धारणकिये थीं । चित्रने पतिके प्रेमकी याद दिलाई । लज्जाको दबाकर नीचा शिर किये हुए कंपित बदनसे रानीने कहा। इस विषयमें रानीने स्वयं अपनी दिनचर्या में लिखाहै यह लेख रानीके हृदयके भावको प्रकाशित करताहै । उसमें लिखा है कि–“मैं ठीक दोबजे सभामें गई।मुझे कुछ खबर नहीं है कि वहां कौन २ था । लार्डमेलबोर्न सजलनेत्रोंसे मेरीओर देखरहा था । वह दूर था । थोड़ेसे में मैंने अपना प्रस्ताव पढ़ सुनाया । उससमय मेरा सर्वांग कांपताथा । परंतु पढ़नेमें मैंने किंचित् भी भूलनहीं की । लार्ड लैंसडाउनने कहाकि इसबातको मुद्रित करानाचाहिये। मैं तुरंतही राज भवन छोड़कर चलीगई। इसकार्यमें दो तीन मिनटसे अधिक न लगे होंगे”। रानीका प्रस्ताव यह था:–“मैंने इससमय आप लोकोंको एककार्यकी सूचना देनेकेलिये जिससे मेरी प्रजाकी भलाई और मेरे भविष्यत् जीवनका घनिष्ट संबंध है, बुलाया है । सेक्सकोवर्ग और गोथाके राजकुमार एलबर्टके पाणिग्रहण करनेका मैंने संकल्प किया है । इस भावी संबंधके लिये मैंने अच्छी तरहसे विचार करलिया है। और मुझे दृढनिश्चय है कि परमेश्वरकी कृपासे इसकार्यमें मुझको घरूबातोंमें सुख होगा और देशका लाभ होगा । मैंने इस प्रस्तावको आपलोगोंको शीघ्रही सुनादेना उचित समझाहै क्योंकि आप लोग एक ऐसे आवश्यक कार्यपर जो मेरे और मेरेराज्यकेलिये परम आवश्यक है विचार करलें। और मुझे भरोसा है कि यह कार्य मेरी प्रिय प्रजाको स्वीकृत होगा”। इस प्रस्तावके प्रकाशित करनेके साथही वह अपनी प्यारी प्रजाको न भूलीं । उन्होंने अपने जेबखर्चसे मेनोर हालमें बंदीगृह मुक्त अनाथ स्त्रियोंकी सहायतामें ५००) रुपया दिया ।

१६ जनवरी सन् १९४० ई० को राजरीतिके अनुसार श्रीमतीने स्वयं उपस्थित होकर पार्लियामेंट खोली । ऐसा जनरव था कि अपनी चाची हेस होमवर्गकी लैंडग्रेवाइनकी मृत्युके कारण श्रीमती स्वयं उपस्थित न होसकैंगी परंतु यह बात असत्य हुई । इस विवाहसे प्रजाको बहुत हर्ष हुआ क्योंकि उसे निश्चयथा कि यह संबंध प्रेमका

परिणाम है। राजकीय प्रपंचसे नहीं हुआ है। पार्लियामेंटमें रानीका जो इस विषयमें व्याख्यान हुआ उसमें यह कहागयाकि "मैंने आप लोगोंको पहले सूचित कर दियाहै कि मैं अपना विवाह राजकुमार एलबर्टसे करना निश्चयकरचुकीहूं। ईश्वरसे प्रार्थना है कि वह इस जोड़ीकी वह बृद्धी करै और इससे मेरी घरेलू सुख और प्रजाके लाभका कर्तव्यसाधन करनेकी शक्ति प्रदान करै। पार्लियामेंटद्वारा यह मेरा प्रस्ताव स्वीकृत होनेपर मुझे अतीव हर्ष होगा। मुझपर और मेरे कुटुंबके साथ आप लोगोंका स्नेह देखकर मुझे विश्वास है कि आपलोग राजकुमारके पद और राजसिंहासनकी प्रतिष्ठाके योग्य उनके लिये प्रबन्ध करनेमें सहायक होंगे।" पार्लियामेंटने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया। राजकुमार एलबर्टको "हिज़ूरायल हाईनेस" की उपाधि और ब्रिटिश सेनामें 'फ़ील्डमार्शल' का पद दिया। दोनों सभाओंमें राजकुमारके वार्षिक वेतनके विषयमें २७ जनवरीको बड़ा विवाद हुआ। लार्ड रसलने ५ लाख रुपया वार्षिक देनेका प्रस्ताव किया। मिस्टर जोज़िफ़ ह्यूम इस बातके विरोधी हुए। उन्होंने कहा कि "२लाख १०हजार देना चाहिये क्योंकि एक युवा व्यक्तिको लण्डनमें बसाकर उसे अधिक रुपया देना हानिकारक है।" परन्तु उनका कथन बहुमतसे अस्वीकार हुआ। और कर्नेल सिवथार्पकी सम्मतिके अनुसार ३ लाख रुपया वार्षिक का ठहराव हुआ। उस अधिवेशनमें किसीनें यह प्रश्न किया कि "यदि राजकुमारको ऋण देना हो तो क्या वह ब्रिटिश कोषसे दियाजायगा?" लार्ड रशलने कहा कि—"जिससमय राजकुमार युवावस्थाको पहुंचे उन्हें अपनी माताकी ओरसे २४०००) रुपये वार्षिककी जागीर मिली थी। रानी विक्टोरियासे सम्बन्धहोनेके साथही राजकुमारने उसमेंसे अपने नौकरोंको पेन्शनदेकर जागीर अपने भाईको देदी। इसके सिवाय उन्हें किसीका देना नहीं है॥"

राजकुमारकी पदवीके विषयमें पार्लियामेंटमें बहुत वादानुवाद हुआ। मंत्रिमण्डलने श्रीमान्‌को "प्रिंसआफ् वेल्स" का पद देना चाहा। परन्तु इसकार्यसे युवराजके स्वत्त्वोंमें आघात पहुँचनेकी सम्भावना थी। इस कारण रानीने यह बात स्वीकार न की। पार्लियामेंटमें पदवीके विषयमें बड़ी हलचल मची। प्राचीन उदाहरण देखनेके लिये पुरानी पोथियां देखीगईं। परन्तु कहींपर कुछ पता न चला। सभाने यह कार्य रानीकी इच्छापर छोड़दिया। रानीने आज्ञादी कि "राजकुमारएलबर्टका दर्जा केवल मुझसे उतरता रहै।" यह बात सबको स्वीकार हुई। और उसीदिनसे राजदर्बारमें राजकुमारको रानीके निकट स्थान मिला॥

अध्याय १७.

विवाहोत्सव ।

विवाहके लिये १० फ़रवरी नियत हुई । ८ को दक्षिण किनारे से एक जहाज़ने आकर लंगर डाला । किनारेपर उतरकर राजकुमारने अपनी प्राणवल्लभाके पास गमन किया। उन्होंने प्रथमभेंटमें एक बहुमूल्य चूडामाणि भेंट किया। प्रेमभरी भेंट पाकर आनन्दकी सीमा न रही । ९ फ़रवरीको रविवार था । राजकुमारने दिनभर रानीके लोगोंसे मिलने भेटनेमें बिताया । उनके मेलजोल और सद्व्यवहारसे राज कुटुम्बको बड़ा हर्ष हुआ । रात्रि के ग्यारह बजे अपनी दुलहिनको अंतिम-बार अकेली छोड़कर राजकुमार अपने घर गये । रात्रि दोनोंकी उत्कंठा, हर्ष, भावी सुखके विचार, समागमकी तरंगें और प्रेमसंकल्पोंमें बीती । प्रातःकाल सूर्यके प्रकाशके साथही दोनोंके हृदयकमल विकसित हुए । मंगलकार्य की तैयारियां होने लगी । परिचारिकोंकी दौड धूप मची । प्यारी प्रजा विवाहके समय की राह देखती,नवीन जोड़ीके दर्शनकेलिये घरके कामकाज छोडकर हाट बाट गली चौराहेपर आ बैठी । किसीने हड़बड़ीमें जैसे तैसे अपना काम किया। कोई चूल्हेपर देगची और तवेपर रोटी जलती छोडकर उठधाई । मार्ग भीड़से खचाखच भर-गया । रस्ते चलना कठिन हुआ । कई दिन पहलेसे जिनलोगोंने मार्गके मकान खिड़किया वाछतें इसकार्यकेलिये भाडेलेली थीं वे डंटकर आबैठे । साधा रण स्थितिके लोग उधर ताकझांक करनेलगे । लोगोंकी खचाखच और भीडमें पीठ से पीठ छिलेन परभी कुशल इतना ही हुआ कि किसीको कुछभी चोट न आई । ड्यूक् आफ् वार्फ़ोकने अपनी सेना सजाकर यथास्थान ला खड़ी की । पहले समयमें विवाह सायंकाल अथवा रात्रिको हुआ करता था परन्तु इसवार रीति परिवर्तनकर दुपहरका समय नियत कियागया । समयसे पूर्व लग्न मंडप युवक युवतियोंसे भरगया ॥

दुलहिन विक्टोरिया ।



ठीक सवाबारह बजे दूल्हराज सजधजकर तैयार हुए। राज महलसे बरात बिदाहोकर सेंटजेम्सके महलमें गई। दूल्हके वस्त्र ब्रिटिशसेनाके फील्डमार्शल पदके योग्य थे। साथमें पिता और भाई थे। मंडपमें पहुँचतेही लोगोंने तालियां पीटकर रूमाल हिलाये। प्रजाका सत्कार पाकर राजकुमार हर्षित हुए। राजकुमारके गलेमे हीरेका हार और छातीपर रानीके दियेहुए दो राजचिह्न चमकते थे। महलमें पहुचने पर सेनाने सलामी उतारी और बाजे बजने लगे। और लोगोंने "वर राजा बहुत वर्ष जियो" का मंगल नादकिया।

इधर दुलहिन विक्टोरिया श्रृंगार सजकर बकिंगहामके महलमेंसे बिदा हुई। उनके साथ राजमाता और लीजनकी बेरोनेस थीं। दुलहिनके कानमें रत्नजटित एरिंग और गलेमें बहुमूल्य हीरेका हार था, हाथमें मोती की चूडियां और शिर पर नारंगी रंगकी टोपी थी। श्वेतसाटिनका गौन था जिसपर १० हजार रुपये की किनारी लगी थी। इस लहँगेको बनानेमें २०० मनुष्य लगे थे और उन्होंने आठ मासमें इसे तैयार कियाथा इस गौनकेसाथ दुलहिनका मुखचन्द्र देखकर आकाशका चन्द्रभी गौण भासित हुआ ॥

रायलचैपलमें प्रथम राजकुमार अपने पिता और भाई समेत पहुंचे। उससमय उनका वदनकमल हर्षसे विकसित था। इतनेहीमें उनकी प्रियतमाकी सवारी आई। दुलहिनके साथ राजकुमारी सोफिया मेटिलडा और लार्ड मेलबोर्न थे। लार्डके हाथमें राजसी तलवार थी और राजमाता पीछे २ चलती थीं। बारह सखियोंने रानीका गौन उठारक्खा था। ये सब लार्ड लोगोंकी कन्यायें थीं। समवयस्का षोडशी बालाओंके मध्यमें दुलहिन तारागणके बीच चंद्रमाके समान देखपडतीं थीं। उस दिन रायल चैपल भी खूब सजायागया था। विवाहके लिये गिरजेके बीचोबीच मंडप बनायागया था। गिरजा किरमिची मखमलसे मंढा था। मखमलकी किनारें सुनहरी थीं। टेबल पर रंगबिरंगी रकाबियां सजीथीं। एक ओर पादरियोंके लिये बैठक थीं। मंडपके बाई ओर चार सुंदर कुरसियां थीं। उनपर ससेक्स और केम्ब्रिजके ड्यूक राजकुमारी आगस्टा और ग्रोसेस्टरकी डचेजथीं। मध्यभागका एक विशाल सिंहासन दुलहिनकेलिये था और उनके पासही राज माताकी कुरसी थी। सामनेकी दो कुरसियोंमेंसे एकपर राजा चौथे विलियमकी रानी और दूसरीपर दूल्ह राज थे। मंडपके निकट दो कुरसियां वार दुलहिनके लिये अलग थीं। इन्हींपर बैठकर विवाह कियागया था। गिरजेकी दीवारोंपर राजचिह्न शोभा देरहे थे॥

गिरजेमें सबलोग यथास्थान जा बैठे। गिरजेकी सजावट वर दुलहिनका ठाट और सहेलियोंके सौंदर्यको देखकर दर्शकोंके चित्त इंद्रसभाकासा सुख अनुभवकर ते थे। केंटरबरीकें आर्च बिशपने विवाह आरंभकिया । लंडनका प्रधानपादरी इस कर्मकांडमें सहायक हुआ । वर दुलहिन धीरे २ ईश्वरोपासनामें संयुक्त हुए। ईसाईधर्मके अनुसार कार्य समाप्त होनेपर केंटरबरीके पादरीने प्रश्न किये। सारा कार्य रानी और राजकुमारके नामपर नहीं किंतु एलबर्ट और विक्टोरियाके नामपर हुआ॥

कहतेहैं कि विवाहसे पूर्व लंडनमें ऐसी गप्पें उडतीथीं कि रानी यह विवाह रानी बनकर करना चाहती हैं। केंटरवरीके आर्चबिशपने विवाहके पहले दिन उनसे पूँछाकि "क्या आप विवाह क्रियामें कुछ लौटफेर करना चाहतीं हैं। " रानीने कहा" नहीं कुछ नहीं, मैं रानी बनकर विवाह नहीं करतीहूं किन्तु एक साधारण स्त्रीकी तरह और इसकारण धर्मके अनुसार सब प्रकारके प्रणकरनेको तैयार हूं । " इसीके अनुसार बडे पादरीने विवाहके समय पूंछा– "रानी, आप अपने पतिकी आज्ञा पालन, उनसे प्रेम करना, उनकी सेवा करना, उनके सुख दुःखमें साथ देना, और जीवनपर्यंत उनकी सहचरी रहना स्वीकार करती हैं।,, करोडों मनुष्योंको अपनी आज्ञाके वशवर्ती करनेवाली प्रभावशालिनी रानीने मृदुस्वरसे कहा "हाँ करूंगी" और स्पष्ट कहदिया कि "मैं अपने पतिका मनहरण करूंगी। " ब्रिटिश राज्यकी नीतिके अनुसार राजा वा रानी ईश्वर और धर्मके अतिरिक्त किसीका पराधीन नहीं है। चाहे जैसी वहांकी स्त्रियोंमें स्वतंत्रता होनेपर भी स्त्री पतिके अधीन है। अब रानीके पति स्वाधीन होनेपर राज नियमका भंग होताथा और इसी कारण लोगोंको ऐसी आशंका हुईथी। परंतु रानीने अपनेको पतिके अर्पणकरनेमे इंग्लैंड राज्यकी स्वामिनीपनका गर्व नरक्खा । इस बातसे उनकी प्रजावर्गमें अधिक प्रतिष्ठा हुई ।

बडे पादरीने पूंछाः—दूलहको दुलहिनका पाणिग्रहण कौन करवावैगा?" । डयूक आफ् ससेक्स कन्यादान करनेपर तैयार हुए। बडे पादरीने दुलहिनका हाथ पकड़कर दूलहके हाथमें दिया । ईसाई धर्मके कितनेही भजन और कर्मकांडके पश्चात् दोनोंसे फिर प्रश्न हुए ।रानीने कहाः—"प्रीति करूंगी, संवर्द्धन करूंगी और आज्ञा पालन करूंगी। " इस समय इस जोडीकी सुंदरता अपूर्व थी। इसी समय बड़े पादरीसे आज्ञा लेकर वरने दुलहिनके हाथमें एक अंगूठी पहनाई । तत्क्षण झंडी फ़हरातेही किले और पार्कमेंसे तोपोंकी धर धराहट आरंभ हुई । लंडनके यावत् गिरजाओंके घंटे टनटनाहट करनेलगे ।और "चिरजीवो नववरवधू" का गान आरंभ हुआ। सब लोगोंने आशीर्वाद दिया । और नगरमें जयजयकार-व्याप्त होगया ।

कैंटरबरीके बड़े पादरीने दोनोंको बाइबलका उपदेश सुनाया। दोनों राजकुटुंबके लोगोंसे मिले। कन्यादान देनेवाले डयूक आफ् ससेक्सने दूल्हसे मिलकर उनके हाथोंका चुंबन किया। अब वरवधू अपनी २ कुरसियोंसे उठकर राजा चौथे विलियमकी विधवा रानी ऐडीलिडके पास गये। दूल्हने रानीके हस्तचुंबन किये। दोनोंने पादवंदन किये और उन्होंने दोनोंको आशीर्वाद दिया। दोनों परस्पर पाणिग्रहण कियें हुए गिरजेके बाहर निकले। राजमार्गपर आतेही प्रजावर्गने रूमाल और टोपियां हिला२कर हर्षनाद किया। आशीर्वाद और स्वागतके शब्दोंसे गगनभेदी शब्द हुआ। और वर वधूको आनन्दमें मग्न देखकर प्रजाके हर्षका ठिकाना न रहा॥

वरवधू जब राजमहलमें पहुंचे विवाहका प्रतिज्ञापत्र उपस्थित कियागया। राजसिंहासनके कमेरेमे जाकर रानीने एलेक्ज़ेड्रिना विक्टोरिया गल्फी और राजकुमारने फ्रांसिस एलबर्ट आगस्टस चार्ले एमेन्युएल व्युसिसी के नामसे हस्ताक्षर किये। इस पत्रपर डयूकआफ्ससेक्स और उन्तीस अन्य उमरावोंने तथा डयूक आफ् वेलिंगटनने साक्षी की। सेंटजेम्सके राजमहलमें सर्वक्रिया समाप्तहोनपर नवजोड़ी बकिंगहाम गई।

अध्याय १८

विवाहमें भोज।

विवाह सकुशल होगया। रात्रिमें बकिंगहाम महलमें बहुत बड़ा भोज हुआ। इस दावतमे राजकुटुंब, मंत्रिमंडल,अमीर उमराव और बड़े २ नागरिक इकट्ठे हुए। इस अवसरपर यूरोपियन लोगोंमें एक रोटी बनाईजातीहै जिसे विवाहकी रोटी (Wedding cake) कहते हैं। इस विवाहमें वेडिंग् केक अद्भुत प्रकारका था। उसका घेरा ९ फुटका था। और उसमें ३॥। मन बोझा था। उसका मूल्य १०५०) रुपयेका था। इसकी मोटाई सोलह इंच और ऊंचाई एक फुट थी। केकपर दूल्ह दुलहिनके चित्र थे। रानीके चित्रके नीचे स्वामिभक्त कुत्ता था। कुत्ता स्वामिभक्ति प्रकाशित कर रहाथा। रानीके निकट एक कपोतकी जोड़ी थी। इससे विवाहके पश्चात् संसारसुखका अनुभव होता था। कामदेव (Cupid) घुटनेपर बही रखकर विवाहकी रजिस्टरी कररहा था और उसीतरहके अनेक सुंदर कामदेव उसका अनुकरण करतेथे। केकके शिरपर श्वेत साटिनके तुर्रे इष्टमित्रों और उपस्थित महाशयोंमें वितरण करनेके लिये सजाये

गये थे । उनके ऊपर V और A के अंगरेजी अक्षर अंकित थे । इनके लिये वही कामदेव खडेथे । इस केकका गुलाबी और नारंजी रंगथा ।

इस अवसरपर रानीकी ओरसे एक २ ब्रूच आभूषण सहेलियोंके भेट किया गयाथा । इसकी आकृति एक पक्षीकीसी थी । पक्षीका शरीर हरेपत्रकाथा । नेत्रमें रत्न चमकतेथे । पीठ हीरेकी बनी हुई थी। पंजोंमें सुवर्ण झलकता था । शेषभागमें मोती चमकरहे थे । यह आभरण रानीकी विशेष आज्ञासे बनायागया था । भोजन समाप्त होनेबाद सायंकालको सब मिलकर विंडसरके महलमें गये। मुख्यगाडीमें वर दुलहिन विराजे । उनके पीछे दूसरी गाडीमे राजकुमारके पिता और भाई सुशोभित थे।नवीन वरवधूको अपने प्रकाशसे प्रकाशित करनेके लिये सूर्यनारायणने बादलमेंसे निकलकर अपनी अस्तप्राय किरणोंसे आभूषणोंको चमकाया। दंपतिके सम्मानकेलिये मार्गके मुख्य२स्थानोंपर रोशनीकीगईथी । ईटन कालेजकी विचित्र शोभा देखकर दर्शकोंके मनहरण होतेथे।कालेजके द्वारपर "विक्टोरिया एलबर्टकी जोड़ी चिरजीवी रहो" वाक्य स्वर्णाक्षरोंमें दीप्तिमान्था। विंडसर केसलमे पहुंचते२ सारानगर तरह २ और रंग २ की रोशनीसे व्याप्तहुआ । उससमय भी दंपति को निहारनेके लिये हाट बाट गली बाजार भीड़से भरगया था लोगोंकी जय ध्वनि मेघगर्जनाको मात करतीथी ॥

ठीक सात बजकर बीसमिनटपर दंपति विंडसर केसलकी हाईस्ट्रीटमे पहुंचे । धीरे२ घंटानाद होनेलगा । लोगोंने जयध्वनिकी और राजकुमारने हाथका सहारा देकर दुलहिनको गाड़ी परसे उतारा । रात्रिको राजमाताने १०० जनको भोजन दिया । रानी एडीलेडनें और अन्यान्य उमराओंने अलग २ भोजदिये । नाटकमंडलियोंने सेंतमें नाटक देखानेकेलिये नाटक गृह खोलदिये । उस समय लंडन नगर आनन्दपूर्ण था । मानो आनन्दही शरीरधरकर वहांका शासन करताहो, इसतरह बोध होता था ॥

अध्याय १९.

सुहागरात और दम्पतिका प्रेम ।

अनेक दिनोंके वियोगके अनन्तर दम्पातिका संयोग हुआ । ११ फरवरीकी रात्रिको दोनोंका प्रथमवार एकान्तवास हुआ । दोनों आनन्दप्रमोदमें दिन बितानेलगे । रानीने बेरन स्टाकमोरको पत्र लिखकर अपना आनन्द प्रकट किया । "संसारमें राजकुमारसे बढ़कर मुझको कोई प्रिय नहीं है । वही अति-

निर्मल और परम कुलीनहै ।" यह पत्र १२ फरवरीको लिखागया था। इसीदिन राजमाता राजकुमारके पिता और अनेक राजकुटुंबके लोग दम्पतिसे मिलने आये। सबने दोनोंको विवाहकी बधाई दी। विवाहसे प्रथम मासमें युरोपियन लोग प्रियतमाको साथलेकर विहारकेलिये विदेश जायाकरते हैं। इसे हनीमून कहते हैं। भारतवासियोंमें इसप्रकारकी कोई रीति नहीं होती है इसीलिये हमने इसको सुहागरातके नामसे परिलक्षित किया है। नव वरवधूकेलिये सुहागरात आनन्दका प्रथमदिन है और युरोपियन लोगोंमें हनीमून प्रथममास है। इनका प्रथममास साधारणलोगोंका सा न था। यह जोड़ी एक मास राज्यकार्यको छोड़कर बाहर नहीं विचरसकती थी। दोही दिनके बाद दम्पतिको लण्डन आनापड़ा॥

१८ फरवरीको रानीने बकिंगहामके राजभवनमें सिधारकर पार्लियामेंट खोली। सभाने विवाहके हर्षमें श्रीमतीको अभिनन्दनपत्र दिया। उसीदिन लण्डनके पादरी, कार्पोरेशन, केम्ब्रिज विश्वविद्यालय और स्काटलैंडके गिरजोंकी ओरके मानपत्र आये। २६ फरवरीको श्रीमतीने अपने प्रियतमको जी. सी. बी, की उपाधिदी और ११ वीं लाइट् ड्रेगून सेनाका अध्यक्ष बनाकर उसका नाम "प्रिंसएलवर्ट हुसार्स" रक्खा॥

२८ फरवरीको राजकुमारके पिता कोवर्गके ड्यूकने जर्मनीको प्रयाण किया। पितृवियोगसे राजकुमारका हृदय भरआया क्योंकि आज ही से पितासे सदाकेलिये अलग होनेका आरम्भथा। पतिको पितृवियोगसे जो दुःख हुआ उसकी आंतरिक पीड़ाका रानीने अपनी 'दिनचर्या' में इस तरह वर्णन किया है। "पतिने मुझसे कहा कि तुम्हारे पिता नहीं है इसलिये तुम मेरे आन्तरिक दुःखको नहीं जानसकती हो। मेरा बालवय बड़ा सुखसे बीता था। अब उनके पास केवल अर्नेस्टही है। वही पिताकी आंखोंका तारा है। परन्तु यदि मैं आजकलकी तरह प्रियतमका प्रेम सम्पादन करनेमें समर्थ होसकूंगी तो मेरा परम सौभाग्य है। ओहो! मेरे प्रियपतिकेलिये यह कैसा कठिन समय है। उसने पिता, भाई, मित्र और देशको मेरे—केवल मेरेही लिये छोड़दिया। ईश्वरकी कृपासे मैं सुखी, अपने प्रियपतिको सुखी करनेकेलिये बहुतही सुखी होऊं। जहांतक मुझसे होसकैगा मैं उसे प्रसन्न करूंगी।" थोड़े काल पीछे जब भाई अर्नेस्टके विदाहोनेका अवसर आया। ऐसाही वियोगजनित कष्ट राजकुमारको फिर सहना पड़ा॥

रानीको अपने सुख और पतिके स्वत्व स्थापित करनेके लिये अपनेसे उतरता दर्जा पतिको देकर इस विषयके आज्ञापत्र प्रकाशित करनेके लिये शीघ्रता करनी

पड़ी । आज्ञापत्र प्रकाशित होतेही सब गड़बड़ मिटगई । राजकुमार बडे बुद्धि-
मान् और धीर थे । वह रानीको अपनी इच्छानुसार चलानेके बदले उन्हें स्वतंत्र-
तासे बर्तनेदेते और आवश्यकता पड़नेपर उचित रीतिसे सम्मति देते थे । उन्होंने
अपने पिताके नाम एक पत्रमें लिखा था कि मैं विक्टोरियाको यथेच्छ बरतने देताहूं ।”
वह अपनी प्रियतमाके कार्य निर्वाहके लिये मार्ग निष्कंटक करनेका प्रयत्नकरते । वह
कभी राज कार्यका स्वतंत्र बोझा अपने शिरपर न लेते परंतु सामाजिक और
निजके कार्योंमें कुटुंबके मुखिया, राजनैतिकबातोंमें गुप्तमंत्री, घरेलू कामोंके प्रबंधक
और राजप्रबंधमें सहायक बनकर सहायता करते थे । यदि हजारों और लाखोंमें
किसी विवाहसे दम्पतिको सुख होता है, दोनोमें परस्परकी हार्दिक प्रीति होतीहै तो
वह विवाह रानी विक्टोरिया और राजकुमार एलबर्टका था ॥

यद्यपि अनेक ग्रंथकारोंने राजकुमार एलबर्टको राज्यप्रबंधके कार्योंसे अलग
बतलाया है और उन्होंनेभी अपने पत्रमें इसबातका उल्लेख किया है परंतु सन्५२
में जब इंग्लैंड और फ्रांसकी खूब चलरही थी और फारेन आफिसमें कामकी बड़ी
धूमथी श्रीमतीने अपने मातुल बेलजियमके राजा लियोपोल्डको लिखाथा कि
“एलबर्ट दिन२ राजनैतिक कामोंके अनुरागी होतेजाते हैं । वह इसकार्यके पूर्ण
योग्य हैं । मैं इसे दिन २ नापसंद करतीजाती हूं । हम स्त्रियां शासनकरनेके
लिये नहीं बनाईगई हैं । यदि हम उत्तम स्त्रियां होना चाहैं तो हमें पुरुषोचित कार्यों
को छोड़देना चाहिये । परंतु आवश्यकतापर ऐसे कार्य करने पड़ते हैं । इसी-
लिये मुझको करना पडता है ।” राजकुमारने राजनैतिक कामोंमें वा अन्य
विषयोंमें उत्तम सम्मति देकर रानीने यह कहलवालिया था, नहीं २ प्रजासे यह
कहदिया था कि राज्य रानी नहीं किन्तु उनके पति करते हैं । उन्होंने बलवेके
समयमें भारतका जो उपकार किया था उसका वर्णन आगामि किसी अध्यायमें
होगा ॥

अध्याय २०.

दम्पत्य सुख और दंपति पर गोली ।

अब कुमारी रानीका गृहराज्य आरंभ हुआ । दंपति आमोद प्रमोदमें काल-
यापन करनेलगे । संसार सुखके आरंभके साथही घरके प्रबंधमें गड़बड़ मची।
नौकर चाकर स्वतंत्र होगये । राजमाता युवती विक्टोरियाको छोड़कर अलग
रहनेलगीं । पति एलबर्ट चाहतेथे कि रानीके घरका ठीक २ प्रबंधकिया जाय।
रानीभी उनको सदा अपनी आँखोंपर रखती थी परंतु घरकी अव्यवस्था उन

के चित्तपर खटकती थी। उनको यह बात यहांतक बुरी लगी कि उन्होंने अपने मित्र लोवेन स्टीनको लिखा कि:-"मैं बहुतप्रसन्न और संतुष्टहूं परंतु मैं अपने पदकी रक्षा करने में असमर्थ हूं क्योंकि मैं केवल पति हूं किन्तु गृहस्वामी नहीं हूं।" जब यह बात रानीके कानतक पहुंचाई गई तब उन्होंने कहाकि:-"मैंने आत्म समर्पण किया है अर्थात् मैं अपने पतिके आज्ञापालन और प्रेम तथा सन्मान करनेमें वचनबद्ध हूं। और यह पवित्र प्रण कभी सीमाबद्ध न किया जायगा"। लार्ड चैम्बर्लेन और अश्वाध्यक्षके रहनेका राजमहलमें स्थान न था। स्टुअर्ट बिलकुल स्वतंत्र था। नौकरोंके आगे उसकी कुछ पीरी नहीं चलती थी। सब लोग यथेच्छ काम करते और चाहें जब जाते आते थे। इसी तरह की गड़बड़ बहुत वर्षोंतक चलती रही॥

दंपतिने ईस्टरका त्योहार विंडसरमें किया। वहांपर दंपतिका परम श्रद्धा पूर्वक धर्मसंस्कार हुआ। अपरेल मासमें पैरिसके राजकुटुंबमें विवाहथा। इस विवाहपर दंपति वहांगये। विवाह पुर्तगालके राजाकी साली विक्टोरियाका था। दुलहिनका राजकुमार एलबर्टसे संबंध था। नवीन दुलहिनका बाल वयमें बहुत कालतक उनके पास निवास रहा था। इनका प्रेम बहनोंसेभी बढ़कर था। विवहोत्सवमेंसे लौटकर इंग्लैंड आनेबाद एकदिन दंपति सादा वस्त्र पहने बाहर वायुसेवनको गये थे। मार्गमें अकस्मात् बादल चढ़आये। रुमझुम २ मेह बरसने लगा। कहीं छाया का स्थान न मिला। पास रक्षाके लिये छातेभी न थे। इतनेहीमें एकदीन ग्रामीण स्त्रीकी झोंपडी देखपडी। दंपति रक्षापानेकी इच्छासे उसमें गये। स्त्री ने इनको पहँचाना तो नहीं किन्तु अच्छी तरह सत्कार किया। उसने राजा चतुर्थ विलियमकी पुत्री चार्लोट और पुत्र लियोपोल्डकी बहुत प्रशंसा की। दोनों सुनकर प्रसन्न हुए। बहुतवार झोपडीमें रहनेसे जब मेह थमता न देख पड़ा तब दोनों वहांसे अकुलाकर चलदिये। बुढ़ियाने अपना छाता देकर कहा-"भैया शीघ्र लौटाना।" दंपति वहांसे बिदा हुए किन्तु बुढियाने इनका सादापन देखकर पहँचाना नहीं। इसी वर्षके जून मासमें दासव्यापार बन्द करनेके लिये एक सभा हुई थी। इसमें प्रथमवार राजकुमारने बड़ा प्रभावोत्पादक व्याख्यान दिया। यही सभा संसारसे दासव्यापारका नामतक उठा देनेमें समर्थ हुई और इस विषयमें संसारका उपकारकर इंग्लैंडने बड़ानाम पाया॥

१० जूनको सायंकालमें बकिंगहामके राजभवनसे दंपति वायुसेवनके लिये बिदा हुए। दोनों चारघोड़ेकी खुली गाडीमें सवार थे। गाड़ी कान्स्टीटयूशूवल

पहाड़ीके निकट बाटिकाके पास पहुंचतेही एक युवा पुरुषने इनपर गोली दागी। शब्द सुनतेही दोनोंने गाड़ीमेंसे उझककर उधरकी ओर देखा। रानी देखनेके लिये खड़ी होना चाहती थीं परन्तु पतिनें उनका हाथ पकड़कर बिठ ला दिया। उस युवाकी पहली गोली रीती जा चुकी थी इसलिये उसने दूसरा वार किया। दर्शक और पुलिस उसकी ओर दौड़े। उसने भागना आरंभ किया परंतु पुलिसने पकड़ लिया। उसका नाम एडवर्ड आक्सफर्ड था और वय उसका १७ वर्षका था॥

इस आकस्मिक घटनासे रानी बहुत घबरागई। परंतु लोगोंकी घबराहट और चिन्ता देखकर उनका संतोष करनेके लिये उन्हें सावधान होना पड़ा। रानीको कहीं चोटतो नहीं आई है। इस बातके जाननेकी प्रजाको बड़ी उत्कंठा हुई। भीड़मेंसे इसीप्रकारकी पुकार उठती देखकर रानी गाड़ीमें सब लोगोंको दर्शन देनेके लिये खड़ी होगई। और उच्च परंतु मृदुल स्वरसे कहाः– "ईश्वरकी कृपासे मैं प्रसन्न हूं।" सुनतेही भीड़में आनन्दका प्रसार हुआ। वहांसे चलकर दंपति राजमातासे मिले। । माताने हर्षसे पुत्रीका आलिंगन किया। इस घटनासे इंग्लैंड क्या बरन यूरोप भरमें बड़ी हलचल मचगई। राज-कुटुंब, इंग्लैंडके अन्य भद्र पुरुषों और विदेशी राज्योंके प्रतिनिधियोंने बधाईदी। उसदिनसे दंपति विना अंगरक्षकोंके कभी अकेले बाहरन निकले। १२ जूनको इस बातके हर्षमें बहुत बड़ा दर्बार हुआ। और जिन लोगोंने इस घटनाके बाद श्रीमतीके दर्शन नहीं किये थे उन्होंने एस्काटकी घुड़ दौड़में दोनोंको निहारकर आनन्द पाया॥

अपराधी ८ जुलाईको दौरा सिपुर्द हुआ। उसके घरकी तलाशी लेनेपर कितनीही गोलियां और बारूद मिला। और 'तरुण इंग्लैंड' नामकी एक मंड-लीके कितनेही काग़ज़ पत्र मिले। इनमें लिखा था कि सदा इस क्लबके मेंबरोंको तलवार और पिस्तौल लेकर फिरना चाहिये। इसके सिवाय मेंबरोंके नामका पता न चला। अभियोगकी जांचके समय आक्सफर्ड पागल बनगया परंतु जब लार्ड आक्सब्रिजने उसे जेलमें जाकर देखा तो वह अच्छा भला पाया गया। उसने पूंछाः– "क्या अभीतक रानी जीती हैं। मैंने अपनी पिस्तौलमें प्राण नाशक गोली डाली थी।" उसने स्पष्ट रीतिपर अपराध स्वीकार कर बडे जजके समक्ष इसविषयके पत्रपर हस्ताक्षर कर दिये। परंतु उसकी ओरसे जिन २ लोगोंने साक्षियांदी उनका यह कहना था कि "यह पागल है और इस कुटुंबमें वंश परंपरासे पागल होते आये है। इसका पिताभी पागल होकर मरगया था।" ज्यूरीने उसका अपराध स्वीकार कर उसे पागल माना। इसका फैसला यह

हुआ कि "जब रानी चाहैं तब यह कैदसे छूट सकै ।" पैंतीस वर्ष कैद रखनेके बाद इसको देश निकालका दंड दिया गया ॥

अध्याय २१.

सगर्भा रानी ।

विवाहके बाद थोड़ा समय बातकी बातमें निकलगया । अब राज भवनके नौकर चाकरों और कर्मचारियोंमें कानाफूसीका समय आया । किसीने कहा "रानी सगर्भा है,, - कोई बोला:—भई परमेश्वर रानीको पुत्रप्रदान करै तो इंग्लैंड की गादीका वारिस हो ।" दिन रात इसीबातकी चर्चा होनेलगी । एकदिन सुअवसर साधकर रानीने मृदुहास्यके साथ लज्जित होकर पतिको यह शुभ संवाद सुनाया । पतिको सुनकर बड़ा हर्ष हुआ । बात कानोकान मंत्रिवर्ग में पहुंची । पार्लियामेंटमें रिजेंसी बिल उपस्थिहोनेका अवसर आया । इसमें ठहराव यही हुआ कि "यदि दैवयोगसे (ईश्वर न करै) रानीकी मृत्यु हो जाय तो युवराज वा राजकुमारीके युवा होने तक रानी पति रिजेंट नियत हो और उन्हींकी आज्ञासे राज्यका शासन हुआ करै ॥"

गर्भवती रानीने मधुर भाषण, आनन्दमें प्रमोद और सैरमें नौमास विताये । पतिने सदा अपनी प्रियतमाको आनन्दमें रहनेका उद्देश्य साधन किया । नगरके छोटे २ बालकोंको खेल कूदमें देखकर दोनों अपनी संततिकी बालक्रीडाकी आशा मनमोदकसे सुखानुभव करनेलगे । इस समयभी रानीने राज्यकार्यको न छोड़ा । लार्ड मेलबोर्न पेशी लेकर नित्य नियत समयपर आते और आवश्यक कागज़ों पर हस्ताक्षर कराकर लेजाया करते थे ॥

पार्लियामेंटमें से टोरीमतके लोग जो आजकल कंसर्वेटिवके नामसे प्रसिद्ध हैं, पहले २ राजकुमारसे घृणा करते थे परंतु उन्होंने अपने सद्गुणोंसे सबके मनोंको जीत लिया । मेलबोर्न और वेलिंग्टनने रिजेंसी बिल उपस्थित होते समय इनकी बड़ी स्तुति की और रानीने राजनीतिका प्रचलित भेद इनके लिये निकाल डाला ॥

राजकुमार एलबर्टके साथ रानीने प्रथमवार २१ अगस्तको पार्लियामेंट बंदकी । इस मासकी २६ तिथिको रानी पूर्णवयको पहुंची । २८ को रानीके पतिको लंडनकी स्वतंत्रता दीगई । राज्यकी विधिके अनुसार लार्ड चैबर्लेनने कहा:— "राजकुमार बड़े सज्जन हैं और यह सदा रानीके सच्चे भक्त रहैंगे इसलिये इन्हें

नगर की स्वतंत्रता देना योग्य है। ''यद्यपि भारत वासियोंकी दृष्टिमें पतिको पत्निका भक्तबताना और पत्नीका पतिको सेवक मानकर कार्यकरना अयोग्य है परंतु इस विषयमें रानी पत्निहोनेपरभी इंग्लैंडकी स्वामिनी थीं और राजकुमार पति होनेपरभी रानीके दर्बारमें एक उच्चपदस्थ उमराव थे। उन्होंने लंडन नगरकी स्वतंत्रता प्राप्तकरते समय कहा कि:–" लंडन नगरकी स्वतंत्रता मिलनेसे मैं परम सम्मानित हुआहूं। इस अवसरपर आप लोगोंके समक्ष खड़ा रहनेमें मुझको परमानन्द प्राप्त है। आपने मुझपर बड़ी कृपा की है। संसारके यावत् नगरोंमें लंडनकी शोभा और सम्पत्ति अपार है। आपका साथी (नागरिक) बननेका मुझे बड़ा गर्व है और मैं आप लोगोंका रानीपर भक्ति भाव देखकर बहुत प्रसन्न हुआ हूं"। इसकेबाद वह प्रिवी कौन्सिलके मेंबर नियत हुए। इसकार्यको उन्होंने बहुतही चाव और सावधानीसे किया और एक बैरिस्टरको नियतकर अंगरेज़ी आईनका अध्ययन किया॥

अध्याय २२.

राजकुमारी का जन्म।

नवंबर के आरंभमें रानीके लिये सोवड़की तैयारियां हुई। प्रसूतिकाल निकट आता देखकर रानी विंडसरके किलेसे निकलकर लंडनके बंकिंगहाम महलमें गई। रानीने १३ नवंबरसे उस महलमें निवास किया और २१ तारीखको राजपुत्रीका दुपहरके १ बजकर ४० मिनटपर जन्म हुआ। उससमय जन्म होनेके कमरेमें राजमाता, पति एलबर्ट, दाइयां और मिसेज लिली उपस्थित थीं और पासके दीवानखानेमें ससेक्सके ड्यूक, केंटरबरीके आर्चविशप, लंडनके प्रधानपादरी और लार्डमेलबोर्न आदि अनेक भद्रपुरुष इकट्ठे हुएथे। युवराजके जन्म समयमें प्रिवी कौंसिलके यावत् मेंबरोंका वहां उपस्थित रहना आवश्यक था इसलिये प्राय: सबही लोग वहांआगयेथे। जन्मके दश मिनट बाद मेम लिली राजकुमारी को हाथ में उठाकर सब लोगोंको दिखानेके लिये बाहर लाई। कुमारीका शरीर दृढ और सुंदरथा। बालकको एक टेबलपर लिटायागया परंतु रो २ कर उसने लोगोंके कान फोड़ दिये। लड़कीको भीतर लेगये और सबलोग वहांसे बिदा हुए। तोपोंके फेरोंसे नगर वासियों को विदित होगया कि राजकुमारी का जन्म हुआ है॥

पतिको भयहुआ कि कहीं नगरवालोंके चित्तको युवराजके बदले कन्या

उत्पन्नहोनेंसे दुःख न हो परंतु रानीने उनसे कहाः—"क्या चिन्ता है अबकी बार पुत्र होगा और अपनी ताई की तरह मैं भी बहुत बालकोंकी माता होऊंगी॥"

जिसदिन राजकुमारीका जन्म हुआ उसीदिन जोन्सनामक लड़का बकिंगहामके राजमहलमें पकड़ागया। यह लड़का रानीके सोनेके कमरेके पडौसके एक मकानमें आरामकुर्सीके नीचे छिपाहुआ था। लोगोंने उससे पूंछा—"तू यहां कैसे आ पहुंचा?" वह बोलाः—"पहलेकी तरह। मैं जब चाहूं यहां आसकता हूं। मैंने अनेक वार एकांतमें रानी और उनके पतिको बात चीत करते देखा है। नियमके अनुसार लड़केको कुछ दंड न दियागया। केवल उसे उद्योगशाला में चालचलन सुधारनेंकेलिये भेजदिया॥

सोवड़के दिनोंमें राजकुमारने प्रियतमाकी बड़ी शुश्रूषा की। रानीने अपनी दिनचर्यामें लिखाहै कि "वह दिन रात मेरे पास अडे रहते, मुझे पुस्तकें पढ़कर सुनाते और जो कुछ मैं कहती लिखा करते थे। वही मुझे पलंगपरसे उठाकर आराम कुर्सीपर बैठाते थे और मुझे पहियेदार कुर्सी पर बिठला कर दूसरे कमरेमें लेजाते थे। वह कहीं पर होते परन्तु मेरे बुलातेही चलेआया करते थे। उन्होंने इन दिनोंमें मेरी माता समान शुश्रूषा की। उस समय उनसे बढ़कर कोईभी बुद्धिमती, कृपालु न्यायी और उत्तम दाई मेरेपास न थी॥

इस अवसरमें राजकुमार एलबर्ट बकिंगहामके बागमें बर्फपर खेलनेसे बीमार होगेय। रानीने उनकी योग्यसेवाकर पत्निधर्मका पालन किया और तुरंतही राजकुमार आरोग्य होगये॥

१० फरवरी सन् १८४१ ई० को बकिंगहाम राजमहलमें राजकुमारीका नामकरण संस्कार हुआ। राजा चौथे विलियमकी विधवा रानी एडीलेड्की सम्मतिके अनुसार राजकुमारीका नाम "विक्टोरिया एडीलेड् मेरी ल्यूसा" रक्खागया॥

अध्याय २३.

मेलबोर्नका पदत्याग।

यूरोपमें युद्धके भयानक बादल छागये। चीनमें संग्राम आरम्भहुआ। स्पेन और पुर्तगालके साथ जहाज़ी खटपट आरंभ हुई। लिबेंटके समुद्रमेंभी ऐसाही ढंग दिखाई देनेलगा। ऐसे समयमें इंग्लैंडकी पार्लियामेंटमें गड़बड़ मची। लिबरल मंत्रिमंडलकी हार हुई। नवीन चुनावमें कंसर्वेटिव दलका विजय हुआ। लार्ड मेलबोर्नको अपना पद त्यागना पड़ा। रानीको इसबातसे बहुतदुःख हुआ, उनके चित्तका खेद देख कर लार्ड मेलबोर्नने कहा "आप किसीबातकी चिन्ता

न करें। क्योंकि अब मुझसेभी बढ़कर आपको सलाह देनेके लिये आपके पति राजकुमार एलबर्ट मौजूद हैं । यह परमयोग्य सलाहकार हैं । सन् १८३९ई० से मैं इनको देखरहा हूं । चार वर्षकी जांचमें मुझे अच्छी तरह मालूम होगया है । " रानीने मंत्रिमंडलके परिवर्तन और मेलबोर्नके पद त्यागपर अपनी " दिनचर्या" में लिखाहै कि "सच्चे और प्रिय मित्र, अमात्यके बदलनेसे मुझे दुःख हुआ । "

पार्लियामेंटमें सर रावर्ट पील प्रधान अमात्य हुए । इस समय उन्हें शयन गृहको जाल" की तरह किसी तरह चाल बाज़ीका अवसर न मिला । लार्ड मेलबोर्नके साथही शयन गृहकी सखियोंने इस्तेफा देदिया था । राजकुमार एलबर्टकेलिये सर रावर्ट पीलने लिखाकि ,यह न्यायी और विद्वान हैं इसलिये किसी प्रकारकी गड़बड़ न रही । नवीन प्रधानने कारीगरीकी उन्नति की जांचके लिये एक कमीशन नियत किया । इसके सभापति रानीके पति राजकुमार एलबर्ट नियत हुए । इन्होंने इस कमीशनका सभापतित्व पाकर स्वतंत्रतापूर्वक देशहित साधनका प्रयत्न किया और इन्हीकी प्रेरणासे और वेलिंग्टनकी सलाहसे ब्रिटिश सेनामेंसे द्वंद्वयुद्धकी हानिकारक प्रणाली उठगई । यह दोष यूरोप जैसे शिष्ट देशके फ्रांस जैसे सभ्यराज्यमें अभीतक विद्यमानहै । दो सैनिकों वा राजपुरुषोंमें किसी विषयमें जब खटपट हो जाती है और उसका निपटारा न्यायसे होना संभव नहीं होता है तब दोनों नियत समयपर परस्पर शस्त्र लेकर लड़नेको तैयार होतेहैं । इस युद्धमें जो माराजाता वा घायल हो जाता है उसीकी हार समझी जाती है ।

अध्याय २४.

युवराजका जन्म ।

९ नवंबर सन् १८४१ ई० को बकिंगहाम राजभवनमें आनन्दोत्सवका आरंभ हुआ । दिनके सात बजे राज्यके प्रधान २ कर्मचारी महलमें इकट्ठे हुए। प्रसव कालकी वेदनासे शीघ्र निवृत्त हो रानीने ठीक ग्यारहबजे पुत्रको जन्म दिया । आनन्द दुंदुभीसे नगरमें युवराजके जन्मकी चर्चा फैलगई । इस हर्षसे नगरमें जय जयकार होगया । पुत्रकी प्रसूतिसे माताको जो कुछ कष्ट हुआ था उससे देदिनमें आरोग्य हुआ । माता पिताके पास बधाईके लिये अनेक अभिनन्दन पत्र आये ।

छः वर्षके युवराज ।



भाई बहनकी आया बननेकेलिये अनेक संभावित स्त्रियां उम्मेदवार हुईं। रानीने इसकार्यकेलिये मेम ब्रूमको पसंद किया । दोनों बालकोंका पालन पोषण करनेकेलिये दशहज़ार पौंड वार्षिक नियत हुआ। माता पिताको असीम हर्ष हुआ। दोनों पुत्र पुत्री पाकर ईश्वरको धन्यवाद देनेलगे। भारतवर्षके राजाओंमें बालवयसे ही राजकुमार राजकुमारी अलग रक्खेजाते हैं इसकारण साधारण गृहस्थोंकी अपेक्षा इनमें संततिस्नेह कमहोता है परंतु इन माता पिताका स्नेह साधारण गृहस्थोंसेभी कहीं बढ़कर था। दंपतिको जब कभी किसी सगे संबंधी और इष्ट मित्रके नाम पत्रलिखनेका काम पड़ता तबही वह किसी न किसी बहानेसे इन दुधमुहे बालकोंकी बाललीलाका अवश्य उल्लेख करते थे । संततिस्नेहका यह एक बढ़िया प्रमाण है ॥

१५ जनवरी सन् १८४२ई० को राजकुमारका नामकरण संस्कार हुआ। इस उत्सवपर संयुक्त होनेकेलिये प्रूशियाके राजा जो पीछेसे जर्मनीके सम्राट् होगये थे तीन दिन पहले लंडन आ पहुंचे। उनको इनके धर्म पिताका पद दिया गया। केंटरबरीके प्रधानपादरीनें इनका नाम एडवर्ड रक्खा। एलबर्ट इनके पिता-की ओरसे और एडवर्ड नानाका इस तरह नामाभिषेक हुआ । इस अवसर-पर रानीने प्रुशियाके राजा प्रथम विलियमको गार्टरकी पदवी देकर अपने हाथसे उन्हें पदक पहनाया। सेंट जेम्सके हाथमें रात्रिको भोज हुआ । इसमें केवल अंगूरी शराबकी तीस दरजन बोतलें खर्च हुईं । नामकरण संस्कारमें कुल बीस लाख रुपया व्यय हुआ ॥

रानीने प्रूशियाके राजाका अच्छीतरह आतिथ्य किया। विंडसरके राजभवनमें दोबार उनके हाथोंका चुंबन किया। आतिथ्य सत्कारमें किसीप्रकारकी न्यूनता न रही। राजा उत्सव समाप्तिके अनंतर अपने देशको विदा हुए ॥

युवावस्था रूप लावण्य, राज्य शासन, पतिसुख और इनके साथही पुत्रपुत्रीके जन्मसे लोग रानीको परमसुखी कह२कर हर्षित होने लगे। रानीकाभी दिन २ सुख बढ़ता गया। पतिपत्निमें दिन२ प्रीति बढ़ी, पुत्रपुत्रीकी तोतलीवाणी सुननेकासौ-भाग्यमिला और राज्यकी दिन२ वृद्धि होनेसे प्रजाके सुखऔर शांतिसे चारों ओररानी विक्टोरियाका जयजयकार हुआ। प्रजाकी राजभक्ति बढ़ी और रानीका प्रजाप्रेम बढ़ने लगा। ऐसेही जीवनको धन्य है ॥

जिस समय राजकुमार एक मासके हुए रानीने युवराजको "प्रिंसआफ्वेल्स" की पदवीदी। इससे पूर्व वह सेक्सनी, कार्नवाल, और रोथसेके ड्यूक, केरिक के अर्ल, रेन्फ्र्यूके अर्ल और आइल्सके लार्ड तथा स्काटलैंडके ग्रेट स्टुअर्ड कह लाते थे। वेल्सका प्रिंस बनानेके समय उनको जो सनद दीगई उसमें लिखागयाकिः—"रीतिके अनुसार हम इन्हें उक्त जागीरें प्रदान करती हैं। इनके धारण करनेके लिये तलवार, शिरकेलिये मुकुट, उंगलीके लिये अंगूठी और शासनकेलिये सुनहरी दंड देती हैं। यह अब वहांका शासन और रक्षा करेगा" ॥

अध्याय २९.

पुत्र पुत्रीकी शिक्षा ।

बड़ी राजकुमारी और युवराज (प्रिन्स आफ्वेल्स) की शिक्षाके विषयमें यहांपर लिखना विषयांतर होताहै परंतु इनकी शिक्षाके लिये रानीने जैसा कुछ ध्यान दिया है वह आज कलके राजाओंकेलिये शिक्षाप्रद है। एक वृहत् राज्यकी स्वामिनी होनेपरभी रानीने अपने प्यारे बालकोंको शिक्षा देनेका कैसा प्रबंध किया था । बहुत बड़े राज्यके राजकुमार होनेपरभी उन्होंने किस कष्टसे शिक्षा पाईथी । यही इस अध्यायका उद्देश्यहै ॥

केवल इन्हीं दोनों बालकोंके लिये नहीं किन्तु इनके बाद जो २ बालक हुए उन सबकी शिक्षापर दंपतिका विशेष ध्यान था । वे दोनों संतानको शिक्षा दीक्षा उत्तम प्रकारकी देना राज्यशासनसे भी बढ़कर अपना कर्तव्य समझते थे । माताने अपनेको आदर्श बनाकर संतानको शिक्षा दी थी । धर्मशिक्षामें उनका विशेष ध्यान रहताथा । राज्यकार्यसे कभी २ अवकाश न मिलनेपर उनको खिन्न होकर कहना पड़ता था कि–"अनेक कामोंमें लगी रहनेसे मैं इनकी शिक्षाके विषयमें मातृधर्मका पूर्ण रीतिपर पालन न करसकी । इस बातका मुझे खेदहै । संतानको धार्मिक शिक्षा देनेकेलिये राजकुमार एलबर्टने लिखाथा कि–" इन्हें इसप्रकारकी शिक्षा देना चाहिये जिससे ईश्वरकेलिये इनके हृदयमें पूर्ण आस्था उत्पन्न होकर ये अपने कर्तव्यको समझें । इहलोक और परलोक साधनकेलिये यथार्थ धर्म जानना चाहिये केवल प्रार्थनासे क्या लाभ है । जीवन, उसका उपयोग, प्रभुज्ञान और मृत्युको अच्छी तरह स्मरण रखना चाहिये।" माता पिताने केवल पुस्तकसंबंधी शिक्षा ही नहीं दी थी किन्तु घरके काम और आज्ञापालन सिखाने पर विशेष ध्यान दिया था । दीनातिदीन मनुष्योंके बालक जैसे मनमें आता है बोलते हैं, चाहे जैसी गालियां देते हैं और माता पिताको मारते और आपसमे लड़ते तथा दिनभर रोयाकरते हैं। बड़े धनवानोंके लडकोंमें इन दुर्गुणोंके सिवाय उद्धतपन और लुच्चपनका ऐब होताहै परंतु रानीने ठेठही कह दिया था कि "बालकोंको बहुतही सादीचाल सिखाने और घरके कामकाजमें निपुण करनेकी मेरी इच्छा है ।" और इसीलिये वह बालकोंको कभी अपनेसे अलग नहीं होनेदेतीथीं और सदा अपने पतिके साथ आस्बर्नके राजमहलमें इसीलिये निवास करती थीं । युरोपियन लोगोंकी चाल है कि संतानको बालवयसे पाठशालाओंमें भेजकर दिनरात वहां ही रखते हैं । वे केवल वर्षमें दो चार बार छुट्टियोंपर घरआकर माता पितासे मिलसकते हैं । इसरीतिसे कुछभी लाभ होताहो परंतु इतनी हानि अवश्य होती है कि माता पिताका पुत्रपर और पुत्रका माता पितासे स्नेह नहीं

रहता है और यही विवाहके अनंतर पुत्रके माता पितासे अलग रहनेका कारण है । यहरीति बहुतबुरी है और रानीभी इसके बहुत विरुद्ध थीं । उन्हें सदा अपने बालकों को आंख तले रखकर शिक्षा दिलवाना पसंद था । इसचालसे राज-पुरुष होनेपरभी उनके पुत्रोंमे उद्धतादि दुर्गुणोंके बदले सद्गुणोंने निवास किया है ॥

आस्वर्नके महलके बागमें प्रत्येक बालकको बाग लगानेके लिये अलग २ धरती दीगई थी । इसमें धरती खोदना, खाद डालना, पौदा उगाना, सीचना, छांटना और अपने २ बागोंमें अपनेही हाथसे सुंदर पुष्प और स्वादिष्ट तरकारी उत्पन्न करना सिखाया जाता था । उनकी शिक्षाके लिये राजमहलमें एक छोटा संग्रह-स्थान अलग बनाया गया था । इसमें बालक समुद्र वा नदी किनारेसे भिन्न २ वस्तुयें लाकर इकट्ठी करते और पितासे इनके विषयमें ज्ञान प्राप्त करते थे । लड़कोंके लिये एक बढ़ईकी दूकान और लड़कियोंके लिये एक पाकशाळा अलग बनी हुई थी । इनमें लड़कियां नानाप्रकारके पकान्न मिठाई चटनी मुरब्बे आदि पदार्थ बनाना सीखती थीं और लडकोंको बढ़ईका काम सिखाया जाता था । एक गो-शालामें दूधसे भांति २ के पदार्थ बनानेकी इन्हें अलगही शिक्षा दीजाती थी । माता पिता अवकाश निकालकर बालकोंके साथ खेलमें आनन्द करते परंतु पढ़नेका समय निकट आतेही किसीकी मजाल नहीं थी जो एक मिनट भी अपने शिक्षकोंके पास जानेमें विलंब करसकै । साधारण धनवान्‌भी प्रायः अपने बालकोंसे शिक्षकोंको कमदर्जेका गिनते हैं और इसकारण बालकोंपर उनका दबाब नहीं पड़ता है परंतु इसवरमें यह बात न थी । एकबार बालकोंकी शिक्षकाने रानीसे विनय किया—" श्रीमती, मेरीमाता बहुत बीमारहैं । मुझे खेद है कि इन बालकोंकी शिक्षाका काम अधबिचमें छोड़कर मुझे छुट्टी लेनी पडैगी ।" श्रीमतीने कहाः—" कुछ चिन्ता नहीं, तुम निडर होकर अपनी माताकी सेवा करो । तुम्हारी अनुपस्थिति में बालकोंको पढ़ानेका काम मैं करलूंगी । तुम्हारे बदले कोई दूसरी नहीं रक्खी जायगी । " इस विचारीके छुट्टी लेकर घर पहुंचनेबाद माताका देहान्त होगया । यह स्त्रीशोकसूचक काले वस्त्र पहने हुए छुट्टीसे लौटी । श्रीमतीने इसे दुःखित देखकर बड़ी दया की और हज़ारों काम होनेपर भी उसकी माताका मृत्यु दिवस याद रखकर उसदिन एक काले पाषाणकी चूड़ी जिसपर उसकी माताका नाम और मृत्युका दिन खुदाहुआ था उसकी भेंट की ।

श्रीमतीने अपने बालकोंकी शिक्षाकेलिये कितनेही नियम स्थिर किये थे । उनमेंसे मुख्य ये हैं:—" बालकोंको यथा शक्ति सादगी सिखलाकर सांसारिक कामोंके योग्य करना । उनके अध्ययनमें किसीतरहकी त्रुटि नहो इस प्रकारसे उन्हें सदा अपनेपास रखना । और प्रत्येक कार्यमें उन्हें माता पितापर विश्वास करनेकी टेंव डालना । धर्मकी शिक्षा मातासे बढ़कर कोई नहीं देसकता है । "

श्रीमतीने इस नियमपर बहुतही ध्यान दिया था । ईसाई धर्मकी शिक्षा उन्होंने अपने बालकोंको स्वयं दी थी । एकदिन लंडनके आर्च डीक।(पादरी) ने इन बालकोंकी धर्माभिरुचि देखकर उनकी शिक्षकाकी प्रशंसा की । सुनतेही बालकोंने कहाः–" परंतु धर्मज्ञान तो हमें हमारी माता शिखाती हैं । " जब ईश्वरकृपासे ये बालक बड़े हुए और राजकीय कामकाजसे श्रीमतीको इनकी शिक्षाकी देख भाल करनेका अवसर कम मिलनेलगा तब उन्हों ने एक बार कहा थाः–" मेरे बालकोंको मेरे निकट ईश्वरप्रार्थना करनेका अवसर न मिला इस बातका मुझे परम खेद रहता है । '

पुस्तक संबंधी शिक्षा, नीति और धर्मका ज्ञान और गृहस्थीपनेकी शिक्षाके अतिरिक्त श्रीमतीने अपने पुत्रोंको युद्धसंबंधी शिक्षा भली प्रकारसे दिलवाई थी। और सबके सब पुत्र पौत्र जल और स्थलके युद्धमें पटु, शरीरके दृढ़, साहसी वीर और दयालु हैं ।

अध्याय २६.

इंग्लैंडमें हलचल और श्रीमतीका नाच ।

सन् १८४२ ई० में भारत वर्षकी ईस्ट इंडिया कंपनीसे अफगानिस्तानके अमीर की खटपट होगई । ब्रिटिश गवर्नमेंटके उच्चाधिकारी सर एलेक्ज़ेंडर बर्न और सर विलियम मेकनाटन सेनासहित काटगये । यह दुःखदायक समाचार इंग्लैंडमें एकमास पीछे पहुंचा । कंपनीकी चाल प्रिंस एलबर्टको पसंद न हुई । सरकारी सेनाके दुबारा काबुलपर चढ़ाई करनेसे विजय हुआ । इसी समय चीनमें युद्ध आरंभ हुआ । और वहांभी अंतमें पिनांगका प्रदेश अंगरेजोंके हाथ आया ।

दोनों ओरके युद्ध समाप्त होतेही इंग्लैंडमें हलचल मचगई । राज्यका महसूल घटगया । और 'कानेला' की गड़बड़ आरंभ हुई । इससे दीनोंको अन्न मिलना कठिन होगया । लोगोंकी पुकार सहन न होसकी । प्रजाको शान्त करने के लिये श्रीमतीने स्वयं उपस्थित होकर ३ फरवरीको सदाकी अपेक्षा अधिक धूमधामसे पार्लियामेंट खोली । इससमय राज्ञीपति प्रिंस एलबर्टभी साथथे। श्रीमतीके मधुर भाषण और सुधारकी आशा देनेसे प्रजा संतुष्ट हुई ॥

इसी वर्षके मार्चमें रानीके पति राजकुमार एलबर्टके ज्येष्ठ बंधु राजकुमार अर्नेस्टके विवाहका निमंत्रण आया । श्रीमतीने अपने मामा और श्वशुरको पत्र लिखकर इस कार्यकी बधाई दी । पतिभाईतो विवाहमें जानेको तैयार हुए परंतु इससमय इंग्लैंडका मामला बड़ा बेढव था। रानीको ऐसे समयपर सलाह देनेवाला कोई मनुष्य न था।क्षुधातुर लोगोंने स्काटलैंडकी खानोंमें उपद्रव मचा रक्खा था। लोगोंमें जोश फैलरहा था और कार्नेलाकी गड़बड़ मची हुईथी । इनकारणोंसे वह भाईके विवाहमें न जासके ॥

प्रजाकी स्थिति सुधारनेके लिये आईन बनानेके सिवाय जुलाहों और कारीगरोंकी रक्षाके लिये श्रीमतीने पुराने ढंगके नाच करनेका ठहराव किया। नाच ३ मई सन् १८४२ को हुआ। इंग्लैंडके राजा तीसरे एडवर्डका पार्ट राजकुमार एलबर्टने और रानी फिलीपीका पार्ट रानी विक्टोरियाने लिया। चासर और फ्राइसरकी पुस्तकोंका अवलोकनकर इंग्लैंडके अमीर उमरावोंने पुराने ढंगके वस्त्र आभूषण पहने। इस नृत्यके अवसरपर बकिंगहाम राजभवनमें १३ से १८ हज़ारतक मनुष्य इकट्ठे हुए। हज़ारों और लाखोंके वस्त्रालंकारोंसे अमीर उमराव सजेहुए थे। रानी और राज्ञीपतिने इस उत्सवके लिये विशेषप्रकारकी पोशाकें बनवाईं। नाचके समय युवकयुवतियोंकी शोभा, परस्परप्रेम, नृत्यके हावभाव कटाक्ष स्त्रियोंके मान और शृंगाररसकी यावत् सामग्रीको देखकर रतिनाथ कामदेवको अपने सुखमें स्पर्द्धा होती थी। कविजनोंने इस नृत्य वैभवका वर्णन करनेमें हार खाई। गीत वाद्य और विनोद आमोदने इन्द्रके वैभवका लोगोंको अनुभव कराया। यह नाच "प्लेनटजनेट राजा" के अनुकरणमें हुआथा इस लिये उसीके नामसे प्रसिद्ध है। नाच क्याथा मानो उन्नीसवीं शताब्दिका अद्भुत रासथा। नाच में टिकटसे जो आय हुई उसमेंसे खर्च निकालकर जुलाहोंको उसकी बचतसे सहायता दीगई॥

अध्याय २७.

प्राणसंकट।

जैसे राजाओंकी शक्ति अनंत है वैसेही उनपर कामका बोझाभी अधिक होता है। जैसे राजाओंको सुख अधिक होता है उसी तरह उनके प्राणपर संकटभी अधिक होताहै। यूरोपके राजाओंके प्राण भारतवर्षकी अपेक्षा अधिक भयमें रहते है। भारतवर्षकी प्रजा कैसाभी कष्ट सहकर राजाको ईश्वरका अवतार मानती है और यूरोपकी प्रजा जरासी बातमें रुष्ट होकर राजाके प्राणलेनेपर उतारू होती है। श्रीमतीके प्राणोंपरभी इस प्रकारके अनेक वार संकट आये थे। दो एक अवसरका वर्णन पहले हुआ है॥

सन् ४२ई०की ३० मईको श्रीमती सायंकालके समय वायु सेवनकेलिये पधारी थीं। मार्गमें सात फुटके अंतरसे फ्रांसिस नामक युवाने पिस्तोल मारी। अपराधी पकड़ लिया गया। उसने इसकार्यका कोई कारण न बतलाया। इसबातसे इंग्लैंडमें बड़ी घबराहट मचगई। इस घटनाके दोही चार दिन पीछे रानी अपने पतिके साथ रविवारकेदिन 'रायलचैपल' नामके गिरजेमें प्रार्थनाकेलिये जाने लगीं। भीड़मेंसे एक मनुष्यने बाहर निकलकर रानीपर पिस्तोल ताकी और गोली चलाने का अवसर न देखकर पिस्तोलही गाड़ीमें फेंक दी। इस दुर्घटनासे रानीका स्वास्थ्य बिगड़ गया। डाक्टरोंने बाहरका फिरना बन्द किया। पतिपत्निने प्राण बचने

पर ईश्वरको धन्यवाद दिया। रानीको इसघटनासे भय तो न हुआ किन्तु अकस्मात ऐसा कार्य होनेसे उनके हृदयमें धक्का लगा और यही बीमारीका कारण हुआ इस घटनासे लोगोंने रानीके दृढ विचारोंकी अच्छी तरह जांच करली। अपराधी फ्रांसिसपर दोष प्रमाणितहोकर उसे फांसी दीगई थी परंतु रानीने दयाकर उसे सात वर्षका जेल दिलवाया ॥

इसी वर्षमें तीसरीघटना और हुई। ३ जुलाईको श्रीमती बेलजियमके राजाके साथ गिरजेमें जातीथीं। मार्गमें विलियम बीन नामक मनुष्यने पिस्तोल चलाना चाहा। वह गोली मारनेसे पहलेही पकड़ लियागया। मार्गमें श्रीमतीको इसबातकी खबर न हुई। महलमें आतेही प्रधान अमात्य सह राबर्ट पीलने राज्ञीपतिसे कहा। सुनतेही रानीकी आंखोंमें आंसू भर आये। सर राबर्ट पीलने पार्लियामेंटमें इस प्रकार की घटनायें रोकनेकेलिये एक बिल उपस्थित किया। इसके अनुसार रानी वा अन्य राजपुरुषपर आक्रमण करनेवालेको सातवर्षको देशनिकाल और बेतकी सजा देनेका निश्चय हुआ। परंतु रानीकी आज्ञासे बीनको केवल १॥ वर्षकी क़ैद हुई ॥ पांच सात वर्षतक इसप्रकारकी कोई बात न हुई। सन् १८४९ ई० में आयर्लैंडके एक कारीगरने गोली और उसके बाद एक पदच्युत कप्तानने श्रीमती के मुखपर छड़ी मारी। सन् १८७२ ई० में एक पागल लडकेने एक हाथमें पिस्तोल और दूसरे में प्रार्थना पत्रलेकर रानीपर आक्रमण किया। दशवर्ष बाद दूसरे पागलने आपपर गोली मारी। इसके सिवाय आपपर कई प्रकारके संकट आयेथे। उनमेंसे कईएकका वर्णन पहले हुआहै। परंतु ईश्वरने उनकी सदाही रक्षाकी थी। और इस बातसे यह प्रमाणित होता था कि ईश्वरने उनको संसारका उपकार करनेके लिये उत्पन्न कियाथा ॥

अध्याय २८.

फ्रांस और बेलजियम की यात्रा।

फ्रांस और बेलजियम की यात्रा करने पूर्व श्रीमतीने अपने पतिसहित प्रथम स्काटलैंड और फिर आइल् आफ् वाइट्, डार्ट माउथ, प्लाइमौथ और फालमौथ में नौका की सवारीपर सैर की थी। फालमौथसे चेरबर्ग जाते समय मार्ग में एक विशेष बात हुई। इसका वर्णन एक पुस्तकमें इसतरह लिखाहैः—"रानी नौकामें ऐसे स्थलपर बैठीथीं जहां होकर मल्लाहोंके आने जानेका मार्ग था। मल्लाहोंसे जाड़े में मद्य विना काम न होसका। लार्ड एडोल्फसने श्रीमतीसे कहा कि "आप यहांसे हटकर अन्यत्र जा बैठिये।" रानीने पूंछाः— "क्यों ? क्या यहां कोई उपद्रव होनेवालाहै ? क्या संकट आपड़ा जो मुझे यहांसे हटातेहो"। लार्ड साहब बोलेः— "आपत्ति कुछ नहीं है। मल्लाहोंसे मद्यबिना काम नहीं होताहै। और मद्य इसकोठरी-मेंहै।" रानीने कहाः—" मैं हटूंगीतो सही परंतु पहले इनके मद्यकामुझे एक

प्याला पिलानेका करारकरो।" रानीके मार्ग देतेही मल्लाहोंने एक प्याला मद्य लाकर दिया और श्रीमतीने उसे चखकर उसकी प्रशंसाकी। मल्लाहोंको इस बात से परम हर्षहुआ। और रानीकी सादगीकी सबने प्रशंसाकी। यह यात्रा सन् १८४३ में हुईथी॥

एक वर्ष बाद श्रीमतीने २ अगस्तको प्लाइमौथके टापूसे फ्रांसके राजा फिलिप से मिलने के लिये प्रस्थान किया। इयू के बंदर पर जहाज पहुँचतेही फ्रांसनरेश मिलने के लिये आये। उन्होंने रानीके हाथ का चुंबन किया। बंदरपर फ्रांसीसियोंकी भीड़ इकट्ठी थी। राजा अंगरेज़ी कम बोलसकता था इसलिये एक बार चकरागया फिर जैसे तैसे उसने अपनाभाव अंगरेज़ीमें प्रकाशित किया। जहाज़से उतरतेही फ्रांसीसियोंने रानी के स्वागतमें हर्षनाद किया। फ्रांस • रेशने श्रीमती की बहुत अच्छी तरहसे अभ्यर्थनाकी। फ्रांसीसीलोग रविवारकी छुट्टी कम मानते हैं परंतु अँगरेजोंके साथमें उन्होंने रविवारका त्यौहार पाला। दूसरे दिन इनकी बड़ी धूमधामसे दावतहुई। एक दिन राजा फिलिप रानी विक्टोरियाके साथ और राज कुमार एलबर्ट फ्रांसीसी रानीके साथ वायु सेवनके लिये गये। चार पांच दिन वहां रहकर श्रीमती इंग्लैंडको विदाहुई।

फ्रांससे लौटकर इंग्लैंड आने बाद थोडे दिन विश्राम लेकर दंपतिने बेलजियमकी यात्रा की।१५सितंबरको ब्रुजिश पहुंचे। राजा रानीने दंपतिका बहुत सत्कार किया। इस प्रवासमें कोई बात विशेष नहीं हुई॥

वहांसे लौटकर इंग्लैंडमें दोनोंने केम्ब्रिजका विश्वविद्यालय देखा। राजकुमार एलबर्टको विश्वविद्यालयकी ओरसे एल्.एल्.डीकी पदवी मिली। इसी वर्षमें रानीने सररावर्ट् पीलके घरपर जाकर उनका सत्कार किया।

अध्याय २९.

श्वशुरकी मृत्यु।

दंपति अपने प्रिय बालकों सहित विंडसरके राजमहलमें सुखसे काल यापन करतेथे। इतनेहीमें श्रीमतीके श्वशुर,राजकुमार एलबर्टके पिता ड्यूक आफ् को वर्ग और गोथाकी६०वर्षकी पकी उमरमें मरनेकी ख़बर मिली।श्रीमतीके पतिको पिताकी मृत्युसे बहुत दुःख हुआ। चार वर्षसे उन्होंने पिताके दर्शन नहीं कियेथे। अनेक बार मिलनेका संकल्प किया परंतु किसी न किसी कारणसे न होसका इस संवादको सुनतेही श्रीमतीने बेरन स्टाक्मोरको लिखा किः— "तुम जो यहां होते तो जानसकते कि मेरे प्राणनाथको कितना दुःख है। वह कहते हैं कि अब मेरे सिवाय उन्हें सुख देनेवाला नहीं है परंतु मैं उनके इस दुःखमें किस कामकी?"

पतिके शोकमें प्रियतमाने पूरा साथ दिया। राजकुमारने अपने एक मित्रको लिखा कि– "जो कुछ दुःख पड़ा सो भोगा परंतु मैं अंतसमयमें पिताजीकी सेवा करने और उनसे आशीर्वाद लेनेके लिये उपस्थित न होसका । यहां मैं, फुफी और विक्टोरिया रोतीहैं।" तुरंतही राजकुमार जर्मनी जानेके लिये तैयार हुए। विवाहसे पश्चात् दंपतिको एकभी दिन अलग रहनेका अवसर नहीं आयाथा। इस आकस्मिक वियोगसे दोनोंको बड़ा कष्ट हुआ। इस वियोगके दिनोंमें दंपतिके परस्पर जो प्रेमभरेपत्र आयेगये उनके पढ़नेकी पाठकोंको इच्छा होगी। परन्तु खेद यह है कि स्थानाभाव उन प्रेमपत्रिकाओंको यहांपर प्रकाशित करनेमें बाधक होताहै। प्रियतमाका "कल आपके साथजहां आमोद प्रमोद कियाथा वह स्थान आज खाली किन्तु मेरा हृदय आपविना खालीनहीं है। आपमेरे हृदयमें निवास करतेहैं।" और प्रियतमका खेद कि "मैं जैसे २ आगे बढ़ताहूं आप मुझसे दूर होतीजातीहैं" येही वाक्य उनके हार्दिक प्रेमकी साक्षी देतेहैं।

पतिवियोगसे रानीको एकदिन एक २ वर्षके बराबर निकलताथा परंतु राजकार्यमें संलग्न होनेसे केवल एकान्तके समय वियोग अधिक व्यापताथा। आयर्लैंडके कितनेही राजद्रोही अपने प्रदेशको इंग्लैंडसे स्वतंत्र करना चाहते थे। डेनियन और जान ओकोनेल छःमनुष्यों सहित इस अपराधमें पकड़ेगये। और नवीन पार्लियामेंट खोलते समय सिंहासनकी ओरसे जो व्याख्यान हुआ उससे यह हलचल शांतहुई। पति वियोगके दिनोंमें रानीको गृहप्रबंधकी याद आई श्रीमतीके भोजनमेंसे बचे हुए अन्नका अभीतक दुरुपयोग होताथा। श्रीमतीको यहबात विदित होतेही आपने वह अन्न दीन भिखारियोंको देनेका प्रबंध करदिया इस अन्नसे प्रतिवर्ष ११३०००मनुष्योंका पालन होनेलगा। इसके सिवाय भोजऔर दावतों पर दीन लोगोंको खिलाया जाताथा वह अलगथा।

पति के जर्मनी से लौटने बाद जनरल टामथंब नामक एक व्यक्ति आया। यह बौनाथा। इसकी उंचाई डेढ़ फुटथी और उमर तीसवर्षकीथी इसकी हास्य भरी बातें और शरीरकी अद्भुत बनावटको देखकर लोग चकित होगये। इस समय इसका नाचदेखनेमें फ्रांसके राजा फिलिप भी उपस्थित थे। यह ८ अक्टूबरको आयेथे। इनसे पहले कोईभी फ्रांसका राजा युद्ध प्रसंगके विना केवल प्रीति वर्धनके लिये इंग्लैंडको नहीं गयाथा।

इसी वर्ष में रूसके ज़ार निकोलस इंग्लैंडमें श्रीमतीसे मिलने आये और ६ अगस्तको श्रीमतीके द्वितीय पुत्र एलफ्रेड अरनेस्ट एलबर्ट अर्थात् डयूक आफ़एडिनबराका जन्महुआ॥

ड्यूक आफ् एडिनबरा।



अध्याय ३०.

फुटकर बातें ।

इसके बाद रानीको स्काटलैंडकी यात्राका फिर मन हुआ। वहांकी रमणीयता देखकर श्रीमतीका मन लुब्ध होगया और थोड़ेही वर्षोंके बीचमें उन्होंने तीनबार वहांकी यात्राकी । दूसरी यात्रामें एकबार श्रीमती ब्लेर एथोलीके गिरजेमें ईश्वर प्रार्थनाके लिये गईं । वह गिरजा ईसाई मतमें एपीस्कोपेल पंथका है । श्रीमतीने इस मतके अनुसार वहांपर प्रार्थना नहीं की इसलिये वहांके लोग बहुत भड़के परंतु रानीने उनको अपने मृदु भाषण से शांत किया ।

इसी बीचमें आपने अपना श्वसुरालय देखने और जेठसे मिलनेके लिये जर्मनीकी यात्राकी । इस यात्रामें मेलिन्स स्थानमें बेलजियमके राजा रानीसे भेट हुई । बोन नामक स्थानमें रानीने अपने पतिके शिक्षकसे मिलकर उनका सत्कार किया और पतिके परम रमणीय स्थानों जो एक उत्तम उपवनमें बने हुएथे देखकर बड़ा आनन्द किया। वह पतिकी जन्मभूमि थी इसलिये रानीको उसे देख२कर बड़ा आनन्द हुआ । इस यात्रामें प्रूशियाके राजा प्रथम विलियमने इनका बहुत सत्कार किया । दो तीन दिन इधर उधर फिरनेके अनंतर आप श्वसुरकी जागीरकी राजधानी कोबर्गको गईं । यहाँ राजकुमार अर्नेस्ट, मामा राजा लियेपोल्ड और मामी रानी लुसीसे भेंट हुई । इस जगह पतिके जन्मवाले कमरेमें निवास कर दंपतिने अधिक सुखपाया । पिताकी समाधिके दर्शनसे राजकुमार एलबर्टको और श्वसुरकी समाधि देखकर रानी विक्टोरियाको बड़ा हर्ष हुआ और दोनोंने जोड़ेसे समाधि पूजन किया ।

यात्रासे लौटने बाद इंग्लैंडमें रेल्वेके व्यापारमें बड़ी गड़बड़ मची । आलूकी खेती बिगड़ जानेसे प्रजाको बहुत हानि हुई और अन्न कष्टने 'कार्नला' का फिर बखेड़ा खड़ा किया । लार्ड रशल प्रधान अमात्य हुए परंतु उनके कार्यमें सफलता न हुई इसलिये पील हीको फिर अधिकार मिलगया । २५ जून सन् ४६ को एक राज कुमारीका जन्म हुआ । इनका नाम हेलीना आगस्टा विक्टोरिया रक्खागया । राजकुमार एलबर्टको केम्ब्रिज विश्व विद्यालयने सभापति (चैंसलर) बनाया और इस कारण प्रजाका उनके साथ संबंध और भी दृढ़ हुआ ।

अध्याय ३१.

फ्रांसनरेशका पदच्युत होना ।

फ्रांसके राजा लुई फिलिपके साथ श्रीमतीका घरोपाथा परंतु इस बातसे दोनो राज्योंका कुछभी संबंध नथा । अब फिलिप राजाने स्पेनके साथ संबंध

किया । फिलिपके भतीजे डयूक-डी-काडीनसे स्पेनकी रानीकी बहनका संबंध ठहरा । यह बात इंग्लैंडको पसंद न हुई । श्रीमतीको समझानेके लिये रानी एमिली आई । उनका आपने योग्य सत्कार तो किया परंतु स्पष्ट कहदिया कि इस संबंधसे फ्रांस राज्य बहुत भयमें जा पड़ैगा । हठीले फिलिपूने यह बात न मानी और इसका परिणाम यह हुआ कि यूरोपभर में इस बातसे हलचल मचगई । फिलिपू की यह चाल फ्रांसवालोंको पसंद नहुई और इसी कारणसे उसे अपनी रानी सहित फ्रांस छोडकर भागनापड़ा । राजाफिलिपू गुप्त वेश धरकर जानस्मिथ के नामसे इंग्लैंड आया । राजाकी दुर्दशा देखकर श्रीमतीको बडादुःख हुआ।आपने उसका वहुत कुछ सत्कार किया और उसकी भूलों वा चालोंके लिये कुछभी कहनेका अवसर न आने दिया । इसीतरह फिलिप की जगह दूसरा राजा नियत हुआ उसको भी सहर्ष स्वीकार करलिया । डचेज़्-डी-मोंट पिंसर जिसके कारण यह बखेड़ा हुआथा बहुत दुर्दशाग्रस्त होगई । उसके शरीर पर एकभी कपड़ा बेफटान रहा । इस समय इटाली, स्पेन और आस्ट्रियामें भी बहुत कुछ परिवर्तन हुआ और रानीके मातुल बेलजियम के राजा लियोपोल्ड को पदच्युत करने का प्रयत्न हुआ किन्तु वह बचगये और इसीतरह रानीके जेठ राजकुमार अर्नेस्टकी भी रक्षाहुई॥

इस गड़बड़ के बीचमेंही श्रीमतीने छठे गर्भसे राजकुमारी ल्यूसी केरोलाइन एलबर्ट का १३ मई सन् १८४८ ई० को प्रसव किया । इसीवर्षमें मृत राजा तीसरे ज्यार्ज की कन्या सोफिया का देहान्त होगया जिससे रानीको बहुतखेदहुआ । इंग्लैंडमें बलवा हो जाने का भयथा । कार्टीस लोगोंने उपद्रव खड़ा करदिया । इनकमटैक्स डालने और सेनाका व्यय बढ़ानेसे प्रजा असंतुष्ट होगई । कार्टीस लोग रानीके शासनसे रूठगये । इंग्लैंडमें युद्धकी तैयारी होगई । २ लाखसैनिक नये भरती कियेगये । फ्रांसके नवीन राजा लुई नेपोलियन ने रानीके शरीर रक्षक बनने की प्रतिज्ञाकी । इससमय आयर्लैंड में उपद्रव हुआ । उपद्रवियोंके मुखिया पकड़ेगये और उनको योग्यदंड दिया गया । ऐसे अवसर पर काम इतना बढ़गया कि प्रदेश विभागमेंसे एकवर्ष में २८००० पत्र बाहरगये । श्रीमतीके परिश्रम का यह एक उदाहरणहै।कैसा भी संकट पड़ता परंतु श्रीमती कभी घबराती नथी । आपने अपने मातुलको लिखाकि "कैसी भी हलचल मची परंतु मुझको कभी क्षोभ नहीं हुआ। और न मेरे चित्तमें दुर्बलता आई।" सन् १८४८ ई० में फ्रांसमें राष्ट्रविप्लव हुआ और इसी लिये वहां तीन दिन तक कतल हुआ । उपद्रव शांति का मुख्य कार्य जनरल केविगनगने किया । इस वर्षमें स्काटलैंड के बालमोरल महलकी खरीद हुई और लार्ड मेलबोर्न की मृत्यु हुई । इनकी मृत्युसे श्रीमती को बडा दुःख हुआ । उन्होंने कहा कि "जिसने विशेष बुद्धिमानी और गंभीर विचारोंसे मेरी सहायताकी उसकी मृत्युसे मुझे बड़ा शोक हुआ है ॥"

ड्यूक आफ् कनाटका चित्र।



अध्याय ३२.

जन्म मृत्यु और प्रदर्शिनी।

नवंबरमें मृत राजा चौथे विलियमकी विधवा रानी एडीलेड बहुत बीमार हुई। श्रीमती उनसे मिलने गई। २ दिसंबरको उनकी मृत्यु हुई। इस बातसे श्रीमतीको बहुत दुःख हुआ क्योंकि वह उन्हें मातासेभी अधिक समझतीथीं॥

सन् १८५० ई० की पहली मईको रानीके सातवें गर्भसे तीसरे पुत्रका जन्म हुआ उसदिन महारथी वेलिंगटनका जन्म दिन था इसलिये प्रूशियाके राजा प्रथम विलियमने बालकका नाम "आर्थर विलियम पेट्रिक एलबर्ट" रक्खा। यही ड्यूक आफ् कनाट हैं। सोवडसे निपट कर एकदिन रानी केम्ब्रिजके महलमेंसे बाहर फिरने जातीथीं इतनेहीमें पेट नामक दुष्टने रानीके शिरमें लाठी मारी। अपराधीको सात वर्षका कालापानी हुआ॥

तीसरे ज्यार्ज राजाके सबसे छोटे पुत्र ड्यूक आफ् केम्ब्रिजकी मृत्युसेभी रानीको बहुत दुःख हुआ और ऐसेही समयमें फ्रांसके पदच्युत राजाकी मृत्युके समाचार मिले। रानीने इन दुःखोंसे विश्राम लेनेके लिये फिर स्काटलैंडकी यात्रा की। यहांके हाइलैंडर लोगोंने श्रीमतीके स्वागत में डी नदीके उसपार एक भोज किया। रानीकी मंगल कामनाके लिये मद्यपानका अवसर आया परंतु इस कार्यके लिये प्याला न था। सरदार फोर्बसने पैरसे जूता निकालकर उसमें शराब डाला और तुरंत उठाकर ओट लिया। इसकी युक्ति देखकर समस्त हाईलैंडरोंने इसबातका अनुकरण किया॥

पति एलबर्टकी योजनासे लंडनमें एक प्रदर्शिनी खोलनेका मनसूबा हुआ। पार्लियामेंटने इस प्रस्तावको हर्ष सहित स्वीकार किया। प्रजा इस बातसे बहुत प्रसन्न हुई। परंतु प्रबंध होनेसे पूर्वही प्रिंस एलबर्टके सहायक सर रार्बर्ट् पीलका देहान्त होगया। श्रीमतीने इस कारण प्रदर्शनका काम बन्द रखनेका ठहराव किया परंतु प्रजाका उत्साह और पतिकी इच्छा देखकर अंतमें इस कार्यको स्वीकार कर लिया। हाइड्ड पार्कका रमणीय स्थान इसके लिये पसंद हुआ। सन् १८५१ ई० की १ मईको प्रदर्शिनीका आरंभ हुआ। इसका उत्सव रानीके सिंहासनपर विराजनेके उत्सवसे भी बढ़कर था। सात लाख मनुष्य इस मेलेको देखने इकट्ठे हुए। पुलिसके सुप्रबंधसे किसी प्रकारकी दुर्घटना न हुई। इस कार्यके लिये जो क्रिस्टल पैलिस तैयार हुआ उसमें पचास लाख रुपया व्यय हुआ। प्रदर्शिनीका आरंभ १ मईसे होकर ११ अक्टूबरको समाप्तिहुई।

प्रेबट जनेर नामक नृत्यका पहले वर्णन हुआ है उसी तरहके दो नाच श्रीमतीने प्रदर्शिनीसे निपटने बाद और किये। आपने 'रेस्टोरेशन' नामक प्रथम नाचमें आठ प्रकारसे नृत्यकर अपना नृत्य कौसल दिखलाया ।

अध्याय ३३.

बड़ी २ घटनायें और वेलिंगटनकी मृत्यु ।

फ्रांसके नवीन राजा लुई नेपोलियनने, प्रजाके स्वत्व हरणकर रक्तकी नदी बहाने बाद, राज्य भरमें अपना आतंक स्थापित करदिया। इस बातसे फ्रांसका इंग्लैंडसे मन मोटा व अधिक होगया परंतु फरांसीसियोंकी चाल बाज़ीसे इंग्लैंडका मंत्रिमंडल उनका कुछ न करसका। सन् ५२ ई० के आरंभमें बे आफ़ बिस्केमें 'रामेज़न' नामक जहाज़ जलगया। इसमें १६१ मनुष्यथे जिनमेंसे १४० मृत्युवशहुए। इसी तरह उत्तमाशा अंतरीपके निकट ब्लेकहेड जहाजके नष्ट होनेसे ६३० मनुष्य और २९४ बालक डूबगये। ये सबके सब सैनिकथे। इसी वर्षमें तीसरी दुर्घटना और हुई। बेलबरीका तालाब फटगया। इसमें १०० मनुष्य मरे और हजारों घर नष्ट होगये। इन बातोंसे श्रीमतीको बहुत दुःख हुआ और उन्होंने पत्र लिख२कर मृत मनुष्योंके कुटुंबको धैर्य दिया और चंदा देकर उनकी सहायताकी। इसी वर्षमें लिनकनइनके एक बैरिस्टर जे नील्ड के मृत्यु लेखके अनुसार उसकी विरासतमें २५ लाख रुपया श्रीमतीको मिला।

अधिक श्रमसे श्रमित होकर दंपति स्काटलैंडके बालमोरल महलमें निवास करनेके लिये गयेथे। १६ सितंबरके प्रातःकाल समुद्र तटका वायुसेवन करते २ रानीको अकस्मात् भ्रम हुआ कि डयूक आफ़ वेलिंगटनकी भेट की हुई घड़ी गिरगई। नाकरको तुरंत दोड़ाया। उसने लौटकर खबर दी कि घड़ी तो नहीं गई किन्तु घडीको भेंट करने वाले ड्यूक आफ़ वेलिंगूटनका स्वर्गवास होगया। सुनतेही दम्पति अकचका गये। रानीने कहाकि—" आज इंग्लैंडका—नहीं २ ब्रिटेनका गर्व, कीर्त्ति, महारथी महापुरुष नहीं रहा। इसके समान न कोई दूसरा हुआ और न होगा।" यह रानीके पिता और बेलजियमके राजाके समान वीरथे। कभी युद्धमें पीठ न दिखाने वाले, प्रामाणिक, यूरोपमें परम प्रतिष्ठाप्राप्त महापुरुषथे। इनका देहान्त थोड़े ही घंटोंकी बीमारीमें होगया। श्रीमतीने स्वयं इसके विषयमें लिखाहै कि" स्मरणीय योद्धा डयुक मरनेपरभी उसके सुकार्योंसे सदा चिरंजीवी रहैगा। उसमें भूमंडलके सम्मानका समावेशथा। प्रजागणमें वह

सर्वोत्तम था। दोनों दल उसका आदर करतेथे। राज्यका परममित्र होनेपर भी बड़ा सादाथा। उसने सर्वकार्य सादगी, धैर्य और निर्भयतासे किये। इस राज्यको कभी ऐसा राजभक्त महात्मा नहीं मिलैगा। वह सदा सुसम्माति और कठिनताके समय सहायता देनेको तैयार रहताथा। ऐसा कोई मनुष्य न होगा जिसने उसकी मृत्युपर आंसू न बहायेहों।" शवको संदूकमें रखकर पार्लियामेंटने राजसी ठाट से उसे दफनानेका प्रबंध किया। तैयारीमें एक मास लगा। चार दिन तक शवका प्रदर्शन कियागया १८ नवंबरको डयूकआफवेलिंगृटन की सवारी निकली। इंग्लैंडके छोटे बड़े सब अमीरोंके अतिरिक्त फ़रासीसी प्रजाकी ओरसे भी प्रतिनिधि आया। महारथी नेलसनकी समाधिके निकट इसे स्थान दियागया।

सन् ५३ के आरंभ में विंडसर केसलके निकट प्रिंसआफ वेल्सके महलका रसोईघर जल उठा। इससे प्राणहानि बिलकुल न हुई। इसी वर्षके अपरेलकी ७ तारीखको रानीके अष्टम संतान से चौथे पुत्रका जन्म हुआ। इस बालक का नाम लियोपोल्ड ज्यार्ज डंकन एलबर्ट रक्खागया। इनको डयूक आफ एल-बनीकी उपाधि दीगई। जुलाई मासमें घरभर बीमार होगया। ११ अगस्तको श्रीमतीने जल सेनाकी क़वाइद देखी। इस अवसरपर प्रूशियाके राजकुमार बटम-बर्गके राजा रानी इंग्लैंड आये। इसी मासके अंतमें डबलिनमें प्रदर्शिनी खोलीगई।

इस अवसरमें रूम रूसमें लड़ाईका आरंभ हुआ। इंग्लैंड और फ्रांसने प्रका-शित किया कि जो रूस कुछभी रूमके लिये शिर उठायेगा तो काले समुद्रमें हमारे जहाज़ पेसीपोर्ट पर अधिकार करलेंगे। ब्रिटिशमंत्रिमंडलमें बखेड़ा पडा। प्रजा युद्धकी उत्सुक हुई परंतु राजकुमार एलबर्ट इस बातके विरोधीथे। प्रजाको उन-की सम्मति पसंद न हुई इसलिये लोग उनको बुरा समझने लगे। लिबरल और कंसर्वेटिव दलमें परस्पर बैर बढ़गया। राजकुमार एलबर्टने अपने मित्र और रानीके दूरस्थ संबंधी बेरन स्टाकमोरको लिखा कि "लोग रानीको कैद करना और मुझे निकाल देना चाहते हैं क्योंकि वे मुझे राजद्रोही समझने लगे हैं।" इस बातको जानकर श्रीमतीने लार्ड एबर्डीनको लिखाकि "स्मरण रक्खोकि जो मेरे प्रियतमको बुरा कहते हैं वे मेरे शत्रु हैं। और उनको इस बातका बदला दिया जायगा।" जनवरी सन् १८५४ई० में पार्लियामेंट खुलतेही लार्ड रशल और लार्ड एबर्डीन प्रधान अमात्यने प्रजाके कथनका खंडन किया। इस बातसे सब प्रकारकी शांति होगई। लड़ाईके घिरे हुए बादल बिखरगये। और रानीके विवा-हके चौदहवें वर्षक उत्सव पर सब प्रकारका आनन्द होगया।

अध्याय ३४.

राजकुमारियोंके विवाह ।

जर्मनीके नरेश प्रथम विलियम अपने पुत्र फ्रेडरिकके (जिनका वय २५ वर्षका था) विवाह के लिये बड़े उत्सुक थे। श्रीमती रानी और उनके पति राजकुमार एलबर्ट दोनोंकी इच्छा हुई कि पंद्रह वर्षके वय वाली प्रथम राजकुमारी का विवाह दोनोंकी इच्छासे कियाजाय । अवसर साधकर जर्मनी के युवराज इंग्लैंड आये । दोनों में प्रेमालाप हुआ । युवराजने अपनी इच्छा राजकुमारी को जतलाई । राजकुमारीने युवराज को बरना स्वीकार किया । २९ सितंबर को रानीने दोनों के संबंधकी बात प्रकाशित की । आपने अपनी 'दिनचर्या' में लिखा है कि-"हमारी प्यारी विक्टोरिया का संबंध प्रशिया के युवराज फ्रेडरिक विलियमसे आज पक्का होगया । २० सितंबर को उसने अपने आपही इच्छा प्रकाशित की । युवराज की उमर युवा और कुमारी की अल्पवय होनेसे हमें प्रथम इस संबंध में हिचर मिचर हुआ । इससे हमने निश्चय किया कि दोनों एक बार फिर इस बातका विचार कर स्थिर करें अथवा दूसरी बार के लिये यह बात उठा रक्खी जाय। परंतु आज दोनों वायु सेवन करने गये उस समय युवराजने राजकुमारी को प्रेम चिह्नमें एक श्वेतमूर्त्ति भेंटकी । कुमारीने वह लाकर मुझे दिखाई इससे बात पक्कीहोगई और विवाह दृढ हुआ । राजकुमारीका विवाह मार्च में निश्चय हुआ । दो मास पश्चात् दूलह इंग्लैंड आया । इस अवसर में राजकुमारी एक दिन किसी कागज़पर मुहर कर रहीथीं । इतनेही में उनके हाथके दस्ताने सुलग उठे । राज कुमारी एलिसने धूलडालकर आग बुझाई । कुमारी बहुत जलगई परंतु उन्होंने धैर्यसे दुःख सहनकर कहाः "माता-को यह बात न जतलाना । नहीं तो वह घबड़ा उठैंगी और पिताजीको शीघ्र बुलवाओ ।" थोड़े समयमें राजकुमारी आरोग्य होगई । इसी अवसरमें १अपरेल सन् १८५७ ई०को श्रीमतीके नवम गर्भसे राजकुमारी बियेट्रिसका जन्म हुआ।

राजकुमारीका विवाह निकट आनेसे अस्सी हज़ार रुपया वार्षिक और चार लाख रुपये विवाहमें दहेज देनेके लिये नियत हुए। इसी वर्षमें रानीने पतिको "प्रिंसकंसर्ट" की उपाधि दी । और इसी वर्ष में भारत वर्षमें बलवा हुआ । जिसके समाचार आगे लिखे गयेहैं ॥

राजकुमारी "विकी"[1] के शुभ विवाहसे इंग्लैंडमें बड़ा आनन्द हुआ। नगरमें धूम धाम मचगई। बरात आनन्दपूर्वक इंग्लैंड आई। २५जनवरी सन्१८५८ई० को विवाहका मुहूर्त्त स्थिर हुआ। १८ जनवरीकी रात्रिमें राजमहलमें नृत्य हुआ। इसमें दुलहिनने अपना नृत्य कौशल दिखलाया। रानीने इस विवाहमें अधिक धूमधाम करना चाहाथा इसलिये लंडन नगरमें बहुत दिन पहलेसे तैयारियां हुई। २८ जनवरीको ईसाई धर्म और इंग्लंडकी राजरीतिके अनुसार बड़े ठाटसे विवाह हुआ। २९ को दूलह दुलहिन बिदा हुए, रानीने बिदा करते समय कुमारी और दामादका वात्सल्यसे चुंबन किया। प्रिय कुमारीके बिदा होनेसे दम्पतिको वियोगजनित खेद हुआ।

कुछ कालके अनन्तर प्रथम राजकुमारीसे मिलनेके लिये दम्पति जर्मनी गये। मेगडेबर्गके निकट वाइल्ड पार्कके स्टेशन पर राजपुत्रीने हाथमें कलंगी लिये माता पिताका स्वागत किया। चौदह दिन वहां निवासकर दंपति अपनी प्रियपुत्रीको वहीं छोड़ इंग्लैंड लौट आये। २७ जनवरी सन् ५९ ई०को लंडनमें शुभ संवाद सुनाई दिये। सुनतेही दंपतिको परमहर्ष हुआ। संवाद ऐसे वैसे नहीं थे। जर्मनीके तारसे राजकुमारी विक्टोरिया (रानीकी प्रथम कुमारी) के उक्त तिथिको पुत्रप्रसव होनेकी खबर थी। यही बालक आजकल जर्मनीके सम्राट् द्वितीय विलियम हैं॥

नवीन वालंटियर सेनाकी २३ जूनको हाइडपार्कमें कवाइद हुई। नेशनल राइफल एसोशियेशनमें रानीने प्रथम वार बंदूकका फेर किया। इसके बाद २२ सितंबरको जन्मभूमिके दर्शन करने राजकुमार एलबर्टके साथ रानीने प्रयाण किया। गोथा पहुंचने पर रानीकी द्वितीय सास का देहान्त होगया। इस यात्रामें प्रथम राजकुमारीसे दंपतिकी फिर भेंट हुई। यहां एक भयंकर घटना हुई। रानीके पति एकदिन गाड़ीमें चढ़कर वायुसेवन को गयेथे। अकस्मात् गाड़ीके घोड़े भड़क उठे। घोड़ोंने यथेच्छ भागना आरंभ किया। भागते २ गाड़ी एक छकड़ेसे टकराई। टकरातेही उसका चूर चूर होगया। पति गाड़ीमेंसे कूदकर बचगया किन्तु कोचमैनके बहुत चोट आई। समाचार पातेही रानी काँप उठी। आंखोंमेंसे आंसू बहने लगे। पतिके मिलनेपर दोनोंको हर्ष हुआ और कुटुंब सहित ईश्वरकी प्रार्थनाकी। इस यात्रामें ब्रुसेल्स होते हुए १६ अक्टूबरको विंड-सर आपहुँचे॥

---

१ बड़ी राज कमारीका छोटा नाम.

राजकुमारी एलिसके विवाहकी इन दिनों इंग्लैंडमें बहुत चर्चाथी। हेसी-डारमेस्टैंडके राजकुमार राजकुमारी से विवाह करनेके उम्मेदवार थे। वह दिसंबर मासमें इंग्लैंड आकर श्रीमतीके मेहमानहुए। इस विवाहके विषयमें श्रीमतीने अपनी "दिनचर्या"में लिखाहै कि "दिनका भोजन किये पीछे राजकुमारी एलिस और राजकुमार लुइस अंगीठीके पास बैठकर गुपचुप परन्तु हँस२कर बाते करते थे। जब मैं दूसरे कमरेमें गई तब थोड़ी देरमें दोनों मेरे पास आये। एलिसने डरते २कहा कि "मुझे इन कुमारके साथ विवाह करना स्वीकार है। और मैं आपसे आशीर्वाद चाहतीहूं।" मैंने उसका हाथ प्रेमसे दबाकर कहा "बेशक यह बहुत उत्तम है।" इस वार्त्तालापके पश्चात् कामकाजसे निपट कर मैं एलिस को साथ लिए हुए एलबर्ट और लुइसके कमरेमें गई। लुइस हमसे बहुतप्रीति पूर्वक मिला और उसने मेरे हाथका चुंबन किया। इसके बाद सन् १८६२ ई०में विवाह हुआ। जिसका वर्णन आगामि अध्यायमें है॥

अध्याय ३९.

राजमाताकी मृत्यु और राजकुमारीका विवाह।

श्रीमतीकी माता, केंटकी डचेज़ जिनकी सुशिक्षासे उनमें इतने गुणोंने वास किया, जिनकी योग्य शिक्षाने श्रीमतीको वास्तविक देवी बनाकर संसारका उपकार किया उन्हींको पिचहत्तर वर्ष के वयमें बीमारीने घेरा। दिन२ शरीरकी शक्ति घटने लगी। सन् १८६१ई० के आरंभमें राजमाताका स्वास्थ्य बिगड़ना आरंभ हुआ। मार्चमें हाथमें कुछ पीडा आरंभ हुई इसकारण कुछ चीर फाड़ करानी पड़ी। १५मार्चको दंपतिको खबर मिली कि राजमाता का स्वास्थ्य अधिक बिगड़गया है। कभी २ अचेत होजाती हैं और हिचकियांभी आनेलगी हैं। सुनते ही दोनों दौड़े हुए फ्रागमोरके महलमें राजमाताके पासगये। श्रीमतीको बाहर छोड़कर राजकुमार एलबर्ट सासके पास कमरेमें गये। थोडीदेरमें बाहर आकर अपनी प्रियतमासे रोनेके सिवाय कुछ न कहा। दंपतिने भीतर जाकर देखा तो राजमाता पलंगपर बैठी हुईथीं। श्रीमतीने प्रणाम कर माता के हाथका चुंबन किया और अपना चुंबन करानेके लिये अपना कोमल कपोल माताके होठोंके लगाया परन्तु माने चुंबन न किया। केवल पुत्रीके शिरपर हाथ फेरकर रहगई। माताकी दशा देखकर दोनोंके चित्तपर खटका होगया। श्रीमतीने डाक्टरोंसे पूंछा तो उन्होंने कहा कि अब इनके जीनेकी आशानहीं है॥

कुछ मास पूर्व श्रीमतीके पतिने अपनी पुत्रीको लिखाथा कि संसारमें मेरे समान कोई सुखी नहीं है क्योंकि मैंने अभीतक किसीकी मृत्यु नहीं देखी है।यही स्थिति रानीकी थी। दम्पतिके असीम सुखमें एकाएक इस दुःखका बोझा आपड़ा श्रीमती अपनी माताके पास उसीतरह लाड प्यारसे रहतीथीं जैसे उनका ढंग बालवयमेंथा। आपको प्रथम बारके दुःखने कातर करदिया। रात्रि बड़ी कठिनतासे तारे और घंटे गिनते बीती। प्रभात होतेही पतिने श्रीमतीको बहुत आश्वासन दिया। रानीने माताकी नाडी मंद देखकर कहा "हाय! माता बिना संसार का सुख फीकाहै।" इस विषयमें श्रीमतीने अपनी "दिनचर्या" में लिखाहै कि "रोते २ मुझे हिचकियां आनेलगीं। मैंने उसके हृदयपर गिरकर अंतिम चुंबनकिया।एलबर्ट मुझे दुःखसे मुक्त करनेको दूसरे कमरेमें लेगये। वहां जाकर उन्होंने माताकी अंतिम ख़बर सुनाई। मैंने दौड़कर माताके दर्शनकिये। हे परमेश्वर! कैसा भयानक दृश्य था! उसके प्राणात्माकी निवृत्ति हुई। सब दुःखों का अंतहोगया। मेरी प्रियमाता! अब मेरी नहीं रही अब वह चल बसी।"

दंपतिने जाकर राजमाताका कमरा देखा तो वह बहुत व्यवस्थासे था। एक ओर केनेरी पक्षी गारहाथा दूसरी ओर टोपीका कसीदा अधूराथा। दंपति के शोक की सीमा न रही। मरनेसे पूर्व राजमाताने अपनी प्रियपुत्री विक्टोरियाको अपना वारिस किया॥

२५ मार्चको माताकी अंतेष्टि क्रिया हुई। राजमाताको जो पेन्शन मिला करतीथी वह अबसे उनकी द्वितीय पुत्री को मिलने लगी। उनके सब नौकरों को पेन्शन दीगई और मुख्यपरिचारिका को रानीने अपने पास रक्खा। इनकी मृत्यु पर नगर और पार्लियामेंटमें बहुत शोक हुआ॥

राजमाताके शोक की समाप्ति नहीं होने पाई थी इतनेहीमें राजकुमारी एलिसके विवाह की तैयारी हुई। पार्लियामेंटने तीन लाख रुपये का दहेज और साठ हजार वार्षिक देना निश्चय किया। बरात लंडन आपहुंची। इस उत्सवपर जो मेहमान आये थे उन्होंने श्रीमती का शोक दूर कराया। माताके दुःखमें पुत्रीका विवाहकर दंपतिने अंतिम बार सुखानुभव किया परंतु यह सुख अब अधिक कालतक टिकनेवाला न था। विवाह के अनंतर आयर्लैंडकी यात्रामें एक दिन अकस्मात् श्रीमतीके मुखसे निकलगया:—" खेद! कहीं ऐसानहोकि हमारी यह अंतिम भेट हो!" इस अनायास कथनपर उससमय किसी ने लक्ष न दिया किन्तु बात यह सच्ची निकली॥

विवाहसे लेकर सन् १८६१ ई० तक बहुतही आनन्दरहा । दम्पतिने सुखके सिवाय दुःखका नामतक भी न जाना । माताही इस सुखकी जन्मदात्री थी उसी ने श्रीमतीको पढ़ा लिखाकर सुखभोगनेके योग्य कियाथा और सच पूंछो तो रानी विक्टोरिया का सुख माताके साथही विदा होकर मातृवियोग के दिनसे श्रीमती के दुःखका आरंभ होगया ॥

अध्याय ३६.

दुःखका आरंभ ।

राजमाताकी मृत्युसे दुःखका आरंभ होगयाथा । श्रीमतीके जीवन खेतमें दुःखका बीज बोदिया गयाथा परंतु जबतक अंकुर उत्पन्न न हुआ उसकी किसीको चिन्ता न हुई । "सुखस्यानंतरं दुःखं दुःखस्यानंतरं सुखम् । चक्रवत्परिवर्त्तन्ते दुःखानि च सुखानि च ॥" इस लोकोक्तिके अनुसार श्रीमतीके सुखके दिन स्वम होगये अब दुःखकी पारी आई । दम्पतिके यौवन सुख, राज्य लक्ष्मी, प्रभुत्व और संतति सुखमें आनन्द पूर्वक कालयापन करते२सन् १८६१ ई०के अंतिम भागमें एकाएक राज्ञीपति एलबर्टका सास्थ्य बिगड़ा । परंतु उन्होंने इस बातकी कुछ पर्वाह नकी । राजकुमार जैसे स्वधर्म निष्ठ और आस्तिक पुरुषको मृत्युका कुछ डर न हुआ । एक दिन उन्होंने अपनी प्रेमपात्री रानीसे कहाः— "मुझे जीनेका किंचित्‌भी लोभ नहीं है । मेरी इच्छित और प्रियवस्तुकी ठीक रक्षा हो सकै तो मैं कल मरनेको तैयार हूं । " उस समय रानीको ऐसे कर्ण कटु वाक्यसे दुःख तो हुआ परंतु पतिका कथन साधारण समझ कर उन्होंने इस पर लक्ष्य न दिया । सैंडहर्स्टकी युद्धशालाका निरीक्षण करनेमें २२ नवंबरको थकावट और वृष्टिसे उनका स्वास्थ्य अधिक बिगड़गया । शरीरके जोड़ों में पीड़ा होने लगी । इतने हीमें समाचार मिले कि एमेरिका में ब्रिटिश जहाज़ 'ट्रीरेंट' पकड़ लिया गया । सुननेसे चित्तको बहुत धक्का लगा "ट्रीरेंट" धूमपोत हेवानासे डाक लेकर इंग्लैंड आरहाथा । इसमें सीडन और एसन नामक दो व्यक्ति सवारथे । ये दोनों एमेरिकाके चार्लेसटाउन से भागकर क्यूबा होते हुए यूरोप जातेथे । प्रतिपक्षियोंने इन दोनोंको 'ट्रीरेंट' के अध्यक्ष से मांगा । जहाज़ वालोंने शरणागत वत्सलताके विचारसे दोनों भगेडुओंको न दिया । बस इसीपर एमेरिकाके "सेंटजेसिंटोंटो" जहाज़ने ट्रीरेंट पकड लिया । इंग्लैंडमें समाचार पहुंचते ही बड़ी हलचल मची । प्रिंस एलबर्टकी सम्मति और प्रयत्नसे वाशिंगटनके ब्रिटिशदूतके साथ इस विषयकी लिखापढ़ी हुई । इस परिश्रमसे उनके

स्वास्थ्यमें अधिक गड़बड़ हुई । ज्वर आनेलगा । राजकुमारने श्रीमतीको अधिक चिन्ताग्रस्त देखकर कहाः—"साधारण बीमारी है । चिन्ता मत करो" परंतु दीवान पामर्स्टनके चित्तपर खटका होगया ।

बीमारी बढ़ती देखकर सरकारी डाक्टर जेनर और सर जेम्स क्लार्कको इलाज सौंपा गया । उन्होंने आरोग्य होनेकी आशादी परंतु बीमारी दिन २ बढ़ती गई। रोग बढ़नेके साथही रानीकी चिन्ता बढ़ी । ७ दिसंबरकी रातमें उन्हें बहुत बुरे२ स्वप्न आये । स्वप्नमें दो देवताओंने उनको घेर लिया जिससे वह बहुत भयभीत हुई । ८ दिसंबरको राजकुमार को उस कमरेमें से उठाकर दूसरे गृहमें लेगये । वह कमरा अशुभथा । उसमें पहले राजा चौथे ज्यार्ज और चौथे विलियमका देहान्त हो चुकाथा परंतु पहलेसे इसबातका किसी को विचारनथा । एलबर्ट की आज्ञासे राजकुमारी एलिसने प्यानो बाजेमें भजनगाया । भजन सुनते ही राजकुमारकी आंखोंमें आँसू भरआये और उन्होंने हाथ जोड़कर परमेश्वरसे पापके प्रायश्चित्तकी प्रार्थना की ॥

८ दिसंबर को रविवारथा । रानीने पतिकी मृत्यु के अनन्तर एक मित्रको पत्रमें लिखाथा कि "गत रविवार को प्राणनाथ भूमिपर थे उसदिन राजकुमारी एलिसके साथ उन्होंने आनन्दमें समय विताया । पिताके कहनेसे कुमारीने भजन गायेथे । गानसमाप्त होने पर उन्होंने ईश्वर प्रार्थना की । यद्यपि उन्होंने कुछ कहानहीं किन्तु उनके मुखकी चेष्टा और हाथकी हाल चालसे स्पष्ट मालूमहोता था कि उनका समय ईश्वर प्रार्थनामें जाताहै ।" पिताकी बीमारी में कुमारी एलिसने बहुत सेवाकी । दिन रात उनके पलंगके पास अड़ीरहीं । और किसी न किसी तरह उनका मन बहलानेके लिये प्रयत्न करती रहीं । पिताको उठाने बैठाने, लिटाने और सेवा करनेमें पुत्रीने बहुत परिश्रम किया और इसकारण दंपतिने उनको आशीर्वाद दिया। रविवारके दिन डाक्टरोंने आशा तो न छोड़ी परंतु पादरियोंके प्रयत्नसे उन्हें ईसाई धर्मकी पुस्तकों में का कुछ भाग "ईश्वराज्ञा" और "दूतवचन" सुनाये । रात्रिको पतिकी दशा रानीको कुछ अच्छी जानपड़ीं। पतिने मृदुहास्यसे" हृदयेश्वरी प्राणवल्लभा" का संबोधनकर रानीके मुखपर हाथफेरा । इससे रानीके चित्तको विश्रांतिहुई ॥

सोमवारको ज्वरने बलपकड़ा। परंतु डाक्टरों ने आशा छोडी नहीं । रात्रिको उन्होंने रानीके शयन समय उनका चुंबनकिया । बुध गुरु और शुक्र को कोई विशेष बात नहीं हुई । शनिवार ता० १४ दिसंबर सन् १८६१ई० का प्रातःकाल श्रीमती, राजकुटुंब और ब्रिटिशराज्यपर वज्रपात करनेके लिये उदयहुआ ।

दिनभर प्राणपतिकी प्रकृति अच्छी रहनेसे रानीको जो आशा हुई थी वह एक साथ निराशामें बदलगई। डाक्टरको सन्निपातके लक्षण मालूम होगये।डाक्टरका संकेत पाकर रानीके होश उड़गये । उससमयसे उन्होंने पतिको बिलकुल न छोड़ा। थोड़ेही कालमें पतिकी दशा अधिक बिगड़ती देखकर श्रीमतीने अपनेको कोसना आरंभकिया । उससमय पिताके चरणोंमें युवराज और राजकुमारी हेलेना दोनों बैठेथे । महलमें चिड़िया बोलनेका शब्द तक नहीं था । सब सूनसान था । आंसूकी नदियाँ बहरहीथीं । पौने ग्यारहका समय हुआ । श्वासकी गति मंद होगई । मुखकी आकृति, प्रभाव और सौंदर्यमें किसी तरहका अंतर न आया । ऐसे समयमें अपनी प्रियपत्नीको सदाके लिये शोकसागर में डाल ब्रिटिश राज्यके मुकुटका मुकुट, प्यारे संतानके पूज्यपिता, प्रजाके सच्चे शुभचिन्तक, परोपकारी, विद्वान्, बुद्धिमान्, वीर संसारसे विदाहुए । उनका शव मरण शय्यापर सोता रहा । रानी और एलिसको मूर्च्छा आगई । महल में रोना कूटना मचगया । हाय ! कैसा दुःखदायी समय !!

अध्याय ३७.

पतिका स्वर्गवास ।

रात्रिके शांतिमय समयमें अशांतिफैली।निद्रादेवीके वशीभूत नागरिकोंको सेंटपालके गिरजेके वृहत् घंटने टनाटनके भयानक और हृदयभेदी शब्दसे जगादिया उसीसमयसे लंडनमें हाहाकार मचा। सूर्यके उदय होतेही तारपर तार उड़नेलगे। बातकी बातमें ग्रेटब्रिटेन क्या बरन यूरोप और एमेरिकामें इस शोक संवादने जा प्रवेशकिया। ४२वर्षके वयमें रानी, सुरसुन्दरी विक्टोरिया सधवासे विधवा होगई । २१ वर्षतक अपने बहुमूल्य विचारोंसे जिस महापुरुषने ब्रिटिश साम्राज्यकी सहायताकी थी, जो दयामयी देवीका प्राणनाथ था जिसके लिये यूरोप और एमेरिकाके यावत् बुद्धिमानों और दीनोंकी पूज्यबुद्धिथी उसके प्राणोंने सदाके लिये प्रयाण कर संसारमें से एक रत्न उठादिया । रानी विक्टोरियाके शाशनकी सुकीर्त्ति स्थापन करानेके दोही कारणथे । एक उनकी माता जिन्होंने उनके कोमल अन्तःकरणमें सद्गुणोंको स्थानदिया और दूसरे उनके पति राजकुमार एलबर्ट । प्रौढावस्थामें रानीने पतिसे राज्यशासनमें बहुत कुछ सहायताली थी । केवल सहायताही क्यों रानीके नामसे यहीं इंग्लैंडका शासन करते थे ।

विंडसरके राजभवनमें रुदनका गगनभेदी शब्द होने लगा । रानीके शोकाश्रुने प्रजाके हृदय विदीर्ण करडाले।पति वियोगमें भारतकी आदर्श नारियां सती होती हैं । इंग्लैंडकी यहचाल नहीं है परन्तु इसमें यह न समझना चाहिये कि वहांकी

रमणियोंमें पतिभक्ति नहीं है। रानी पतिभक्तिकी मानों मूर्तिथीं। प्रजोपकारके लिये उन्होंने शरीर रक्खा और इसीकारण वह पतिके सहगामिनी नहुई। इतना होनेपरभी उनका स्वास्थ्य बहुत विगड़गया। पतिकी मृत्युके साथही रानीके लिये चिन्ताबढ़ी और प्रजाने उनको इस शोकका बोझा हलका करनेके लिये विंडसर छोड़नेकी सम्मति दी परंतु एक परम साध्वी रमणीसे ऐसे दुर्घट समयमें इस प्रकारका दुःसाहस क्यों कर हो सकता है। पतिके मरणका घाव हृदय पर लगतेंही श्रीमतीके बालक पितृ वियोगसे पीडित हुए और इसी पीडामें उनको ज्वरने आदबाया इसलिये लाचार होकर रानीको आस्बर्न जाना पड़ा।

राजकुमार एलबर्टकी समाधि राजमाता केंटके निकट तैयार हुई। २३ दिसंबरको राज्ञीपतिके शवकी सवारी निकाली गई। साथ राज्यके मुख्य २ अधिकारियोंके सिवाय छः घोड़ोंकी गाड़ीमें श्रीमतीका राज मुकुट लेकर अर्ल आफ् स्पेन्सर और राजदंड, तलवार और टोपी लेकर लार्ड ज्यार्ज लिनोक्स गये। शव छः घोड़ेकी गाड़ीमें रक्खा गया। शवके साथ मंत्रि मंडल, ड्यूक आफ् कनाट, प्रूशियाके युवराज, बेलजियमके राजकुमार, महाराजा दिलीप सिंह आदिं अनेक राजपुरुष थे।

गिरजेमें पहुँचने बाद प्रार्थना हुई। रानीकी ओरसे एक हीरक पुष्पोंका हार और तुर्रे भेंट हुए। शवके निकट युवराज आदि पुत्र इकट्ठे हुए। मिनट २ के अनंतर तोपें चलाकर राजकुमारका राजसी सत्कार हुआ। सब लोगोंके देखते प्रजाके शोककी अश्रुधारा बहाते राज्ञीपतिका शरीर भूमि समर्पण किया गया। प्रजावर्गने एक स्वरसे उस समय 'सद्गुणी राजकुमार' के नामसे पुकार कर हृदयका दुःख हलका किया।

अध्याय ३८.

राज्ञीपतिका शासनान्त।

मैंने इस पुस्तकमें अब तक राज्ञीपतिको 'राजकुमार' के नामसे लिखाहै। यह शब्द उनके नामके साथ अधिक व्याप्त था किन्तु राजकुमार केवल राज्ञीपति अर्थात् रानी विक्टोरियाके पति ही नहीं थे किन्तु रानीके साथ ही वह ब्रिटिश राज्यके भी स्वामी थे। विवाहसे थोड़े दिन बाद उन्होंने लिखाथा कि "मैं पतितो हूं किन्तु गृह स्वामी नहीं हूं।" घरमें अप्रबंध नौकरोंकी स्वतंत्रता और रानीके प्रबंधमें हाथ डालना उचित न समझ कर उन्होंने ऐसा लिखदिया था परंतु थोड़ेही कालमें उनकी प्रियतमाने उनकी यह वृत्ति बदलदी। वह प्रत्येक राजकार्यमें पतिकी सम्मतिसे काम करने लगीं और उन्होंने इस विषयमें अपने मातुल

को जो पत्र लिखा वही इस बातका प्रमाण है। मातुलके नाम का पत्र प्रिय पाठक अध्याय १९ में पढ़ आये हैं। इसके दो एक प्रमाण नांचे लिखे हैं। इनकी मृत्युसे श्रीमतीने एक बहुमूल्य मंत्री और सहायक तथा प्रजाने सच्चे और परमार्थी मालिकको खोदिया। सन् १८४७ ई०के जुलाई मासमें बेलजियम नरेश श्रीमती के मातुल राजा लियोपोल्डकी पुत्री के विवाहमें कार्यवश श्रीमती नहीं जासकी थीं। उससमय आपने अपने पतिको अपनी जगह भेजकर लिखाथा कि—"आपके साथ मेरा स्नेह कितना है इसकी जांच इसीमें समझिये कि मैंने अपने सर्वश्रेष्ठ प्यारे एलबर्ट को आग्रह पूर्वक भेजाहै। उनकी अनुपस्थिति में मुझे बहुतही दुःखहोता है। इतने अधिक बालबच्चे होते हुएभी मुझे उनके विना सुहाता नहीं है। उनके विना मानो मेरे घरका प्रकाशही बुतगया है।" प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ मिस्टर सी ग्रेविलने अपनी पुस्तकमें लिखाहै कि—"प्रिंस एलबर्ट मानो स्वयं राजा होगयेहैं। उन्हें काम करना बहुत पसन्दहै। रानी चाहे रानीकी उपाधिधारण करती हैं परन्तु शासनतो वास्तवमें राजकुमार एलबर्ट काहै। सब प्रकारसे वही इंग्लैंडके राजाहैं।" उनकी मृत्युके बाद सेक्सनके राजदूतसे भरे दरबारमें इंग्लैंडके प्रधान अमात्य मिस्टर डिसराइली (लार्ड बीकान्स फील्ड) ने स्पष्ट कहाथा कि—"प्रिंसएलबर्टके साथ मानो हमने इंग्लैंड के राजा को समाधि देदी। इस जर्मन राजकुमारने अन्य राजाओंकी अपेक्षा हमारे समक्ष अधिक बुद्धिमानी और उत्साहसे इंग्लैंडका शासन किया था। रानीके वह सदा प्राइवेट सेक्रेटरी और प्रधान अमात्य थे। हमारे कईएक वृद्ध पुरुषोंके जीवन समाप्त होने तक यदि वह जीवित रहते तो कंसर्वेटिव राज्यमें स्वतंत्रता के स्वत्व किसप्रकारसे भोगे जा सकतेहैं उन्हें दिखला देते। और जो युवा पुरुष मांत्रिमंडलमें भरतीहुए हैं वे प्रिंसके अनुसार प्रसन्नता पूर्वक चलते।" सन् ५७ के बलवे के समय उन्होंने भारत का जो उपकार किया था उसका उल्लेख अन्यत्र है॥

अध्याय ३९.

दुःख में दया।

संसारमें राजपाट पुत्र पौत्र वैभव सब कुछ है परन्तु साध्वी पतिव्रता स्त्रीके लिये पतिसे बढ़कर कुछ नहीं है। बालक बालिकाओंके होते हुए श्रीमती को अल्प कालके लिये पति वियोगसे जो कष्ट हुआथा उसका उदाहरण श्रीमतीके गत अध्यायमें प्रकाशित पत्रसे विदित होता है। अब श्रीमतीने सदा के लिये प्राणनाथको विदा कर दिया। इस दुःख का अनुमान वेही करसकतेहैं जिन्हें इसप्रकारका दुःख भोगना पड़ा है। उन्होंने एक दूसरे पत्रमें लिखाथा कि